सितंबर, 2007, मूल्य : 10 रुपए

कलरव

KALRAV

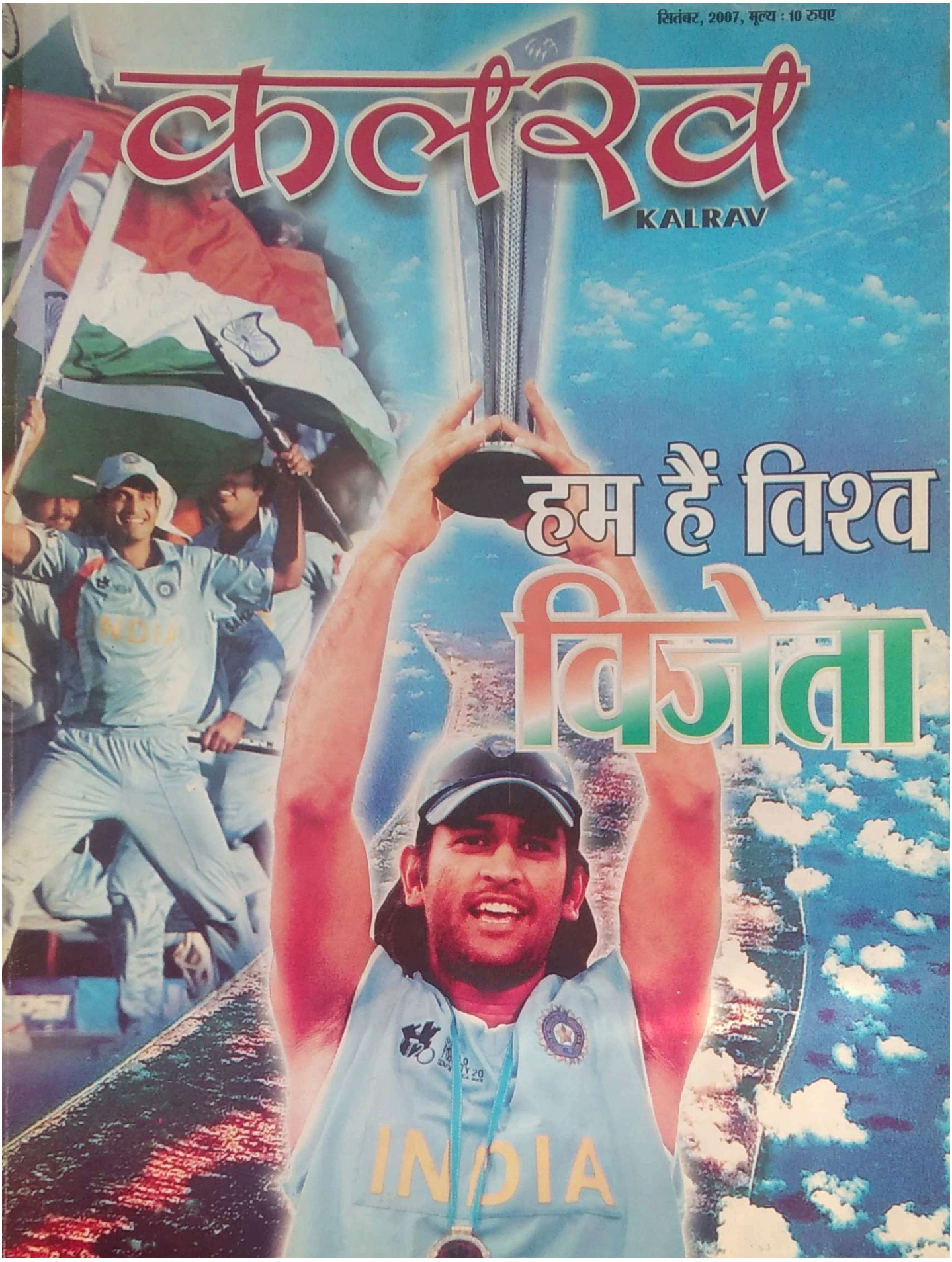

हम हैं विश्व विजेता

आशीष की कविताएं

मनुष्यता के लिए

उनके पास ताकत है
इसी का भ्रम है उन्हें
इसीलिए वे कुछ सोचते नहीं
जानते हैं कि
उनके द्वारा किया गया
हर काम हमेशा
उन्हीं के पक्ष में जाएगा
पर शायद वे भूल जाते हैं
समय हमेशा नहीं रहता एक जैसा
वह समय के साथ
बदलता रहता है
दरअसल वे याद नहीं रख पाते
वे इतिहास से भी नहीं सीखते
सीखना चाहते ही नहीं
अगर यह जहमत उठाते
सच्चाई को समझते
तो उन गल्तियों को नहीं करते
जिनकी वजह से बड़ों-बड़ों को
खानी पड़ी है मात
मिल गए हैं गर्त में
कोई नहीं बचा है
उनका नाम लेवा
इसके बावजूद कि
अभी कुछ समय पहले ही
उन्हीं के जैसे एक सर्वज्ञ
को चाटनी पड़ी है धूल
यह कितना अच्छा होगा
जब लोग समझने लगेंगे
अभी तो इसके कोई
लक्षण नहीं दिखाई दे रहे
संभव है बाद में सोचें
लेकिन जैसा कि
पहले भी होता आया है
सोचते तब हैं
जब सब कुछ
खत्म हो चुका होता है
लगता है उनके लिए
इतिहास का कोई
मतलब नहीं होता
इसीलिए कहना होगा
अभी भी वक्त है
संभल जाइए
और मनुष्य की तरह
मनुष्यता के लिए
कुछ करिए
समय निकल जाने के बाद
कुछ भी हाथ नहीं आएगा
सिवाय पछताने के
कुछ नहीं बचेगा।

यह ठीक नहीं

सिर्फ शिकायत करने
अथवा बिना समझे
समझाने की कोशिश
कोशिश ठीक नहीं
क्योंकि चुप्पी की भी
कोई है अपनी अभिव्यक्ति
और परिभाषा
सिर्फ लक्षणों के आधार पर
गलत होगी, एकांगी
ओढ़ी हुई नहीं है यह चुप्पी
न यह कोशिश कर
ओढ़ा हुआ बड़प्पन
पर वह जो कुछ भी है
बिना समझने की कोशिश किए
उससे बिदकना
साफ गवाही है
इस बात की कि
किस बारीकी से पीछा
छुड़ाया जा रहा है
मानवता से
वरना जुबान भले ही
न बोल रही हो
चेहरा भी पढ़ा जा सकता है
लेकिन इसके लिए जरूरी है
चेहरे को पढ़ने की कला आना
पर दुर्भाग्य भी
अगर कुछ होता है
तो यही कि वह नहीं है
फिर भी वह यह
साबित करने में जुटे हैं
कि सच्चाई उन्हीं की सोच है
यह ठीक नहीं है।

आत्म चिंतन

ऐसे समय
जब कुछ लोग
सीख दे रहे हों
मन की हत्या कर उसे
घर में छोड़कर
कार्यालय जाने की
और कुछ अन्य लोग
नेक सलाह देने लगे हों कि
थोड़ी बहुत जी हुजूरी
तो करनी ही पड़ेगी
उन्हें नकारते हुए मैं एक बार फिर
लड़ना चाहता हूं
उनसे जिनसे ये भयभीत हैं
क्योंकि सच्चाई संघर्ष ही है
पर मुझे उन पर तरस
आ रहा है जो कल तक
सर्वाधिक संघर्ष की
वकालत किया करते थे
इससे थकते नहीं थे
कहते थे सब कुछ संभव है
आज क्या हो गया है उन्हें
यह साफ समझ में आता है
कि वे भी शामिल हो चुके हैं
उसी जमात में जिसके विरुद्ध
कभी लड़ना उनके लिए
गौरव हुआ करता था।

कुछ सोचें

वे कह रहे थे आइए कुछ सोचें
हमने भी सोचा
यह ठीक ही कह रहे
कुछ सोचना चाहिए आखिर बिना सोचे
कुछ होने वाला भी तो नहीं
इसीलिए हम सोचने लगे
सोचने के साथ ही पता चला कि
हम सोच भी सकते हैं
तभी यह भी जाना भी
हम कुछ कर भी सकते हैं
आखिर बिना सोचे और बिना किए
कुछ होने वाला भी नहीं है।

RNI-UPHIN/2006/18176

कलरव

सितंबर, 2007, वर्ष : 1, अंक : 12

संपादक
तड़ित कुमार

प्रबंध संपादक
उदय नारायण राय

उप संपादक
रुचिर कुमार, संध्या शुक्ला

साज-सज्जा
आर.एस 'राज'

संपादकीय सलाहकार मंडल
डा. दिनेश प्रसाद मिश्र
गिरिजा शुक्ला
प्रीति उपाध्याय
त्रिलोकी राय
अनुराधा गुप्ता

कानूनी सलाहकार
इंदु प्रकाश सिंह, इलाहाबाद उच्च न्यायालय/त्रिपुरारी राय, अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय (उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं)

प्रसार व्यवस्थापक
शिवेंद्र

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक अनिल तिवारी द्वारा अक्षर भारत लिमिटेड सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.) से मुद्रित तथा 93ए, अरावली अपार्टमेंट, सेक्टर-52, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.) से प्रकाशित।

फोन
0120-2585565, 9810645159
Email : kalarvms@rediffmail.com

पत्रिका में प्रकाशित लेख से संपादक/कलरव की सहमति आवश्यक नहीं है।

पत्रिका में छपी सामग्री को लेकर किसी तरह के विवाद का निपटारा माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद में ही किया जा सकेगा।

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	10.00 रु.
वार्षिक	100.00 रु.
पांच साल	500.00 रु.
आजीवन	5000.00 रु.

विदेश में

वार्षिक	100 डालर
आजीवन	5000 डालर

इस अंक में — **पृष्ठ**

आशीष की कविताएं 2
मनुष्यता के लिए ◆ यह ठीक नहीं ◆ आत्म चिंतन ◆ कुछ सोचें
पाठकों के पत्र 4
संपादकीय 5
विवादों से बचें, विकास पर ध्यान दें
कवर स्टोरी 6
राम आगे, सेतु पीछे
सोनिया बनीं चैंपियन 8
भाजपा की खुशफहमी बढ़ी 9
अंबिका सोनी पर जयराम का गुस्सा 10
लेख 12
चुनाव का दिवास्वप्न
वर्ल्डकप ट्वेंटी-20 14
हमारे युग का नायक
युवी का फ्रेडी को करारा जवाब 15
वर्ल्डकप क्रिकेट फोटो फीचर 17,18,19
सिनेमा 21
सहाबहार देवानंद
पहल 23
कई प्रजातियां विलुप्ति की कगार पर
हेल्थ 26
चिंता महिलाओं के स्वास्थ्य की
पर्यटन 27
खुबसूरत महाबलेश्वर
कहानी 29
अमीर का न्याय
छह बरस के बाद 33

आपकी बात

हमारे आस-पास बहुत सारी ऐसी बातें होती रहती हैं जिनका न सिर्फ सामाजिक बल्कि राष्ट्रीय महत्व भी होता है। कई लोग ऐसे कार्यों में लगे रहते हैं जो किसी अन्य के लिए प्रेरणा के स्रोत हो सकते हैं। किसी खास घटना पर कुछ लोगों के विचार बहुत सार्थक होते हैं जिनके माध्यम से किसी खास और बड़ी समस्या को हल करने की दिशा में बढ़ा जा सकता है। हम चाहते हैं कि अब आप अपने संकोच त्यागें, जो कुछ भी आपको अच्छा लगता हो, हमें बताएं। यह न सोचें कि वह कितना अच्छा बन पड़ेगा। इसे औरों को तय करने के लिए छोड़ दें। हमें उम्मीद है कि यह जिम्मेदारी आप सभी अवश्य वहन करेंगे। हम आपके विचारों को प्रकाशित करेंगे।

भारत विश्व शक्ति बनेगा

कहते हैं कि आने वाले समय में भारत एक विश्व शक्ति के रूप में उभरेगा। ऐसा आज कल के लोगों का मानना है। क्या यह वाकई सत्य है या क्या इस बात पर विश्वास किया जा सकता है यह तो आने वाला समय ही बताएगा। अगर भारत वाकई में विश्व की एक बड़ी शक्ति बनेगा तो उसमें सबसे बड़ा रोल भारतीय नौजवानों का होगा। क्योंकि यह कार्य युवा वर्ग ही ठीक प्रकार से कर सकता है। लेकिन जिस तरह से हमारे देश के होनहार छात्र अपनी पढ़ाई पूरी करके विदेशों को पलायन कर रहे हैं क्या यह सपना जो भारतीय जनता देख रही है वह पूरा होगा? इसमें कोई शक नहीं कि भारत के पास बहुत से रास्ते हैं जो उसे अन्य देशों से उसको अलग खड़ा करते हैं। बस जरूरत है तो उन सब बातों पर गौर करने की। अगर हम अपनी खामियों को पहचान कर उन्हें दूर करते हुए आगे बढ़े तो वाकई में भारत एक विकसित राष्ट्र बन जाएगा। इसके लिए भारत सरकार को युवाओं के लिए रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। साथ ही रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। इतना ही नहीं भारत सरकार को इस बात को भी देखना आवश्यक है कि वो कौन सी बातें हैं जिनकी तलाश में व्यक्ति बाहर जाता है। अगर सरकार इन सब बातों पर गौर करे तो वाकई भारत एक अवश्य एक विश्व शक्ति बनकर के उभरेगा। इसलिए प्रतिभा पलायन को रोक कर ही भारत को उन्नति के पथ पर लाया जा सकता है।

-विजय उपाध्याय, लखनऊ

आत्मविश्वास बढ़ाने की जरूरत

हाल ही एक फिल्म आई चक दे इंडिया। यह फिल्म मुख्य रूप से हमारे राष्ट्रीय खेल हाकी पर था। जिस तरह से आज हमारा राष्ट्रीय खेल पिछड़ता जा रहा है या यूं कहें कि अपनी पहचान खोता जा रहा है, उसे ही इस फिल्म का सबसे प्रमुख अंग बनाया गया है। साथ ही यह दिखाया गया है कि कैसे चंद लोगों के लालच और गलत निर्णयों का असर पूरे देश पर पड़ता है। यह फिल्म हमें यही दिखाने का प्रयास करती है कि भारतीय टीम के खिलाड़ियों में कोई कमी नहीं है, बस आवश्यकता है तो इन खिलाड़ियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने का। यह बात पता नहीं मानने लायक है कि नहीं लेकिन शायद इस फिल्म ने वाकई में भारतीय पर प्रभाव डाला है क्योंकि हाल ही भारतीय हाकी टीम ने एशिया कप में लगातार जीत हासिल करते हुए एशिया कप विजेता बनीं। ये अलग बात है कि यह प्रभाव फिल्म का था या खिलाड़ियों के जज्बे का, लेकिन कारण चाहे जो भी हो पर यह बात अपने आप में सराहनीय है की शायद अब हमें फिर से पुराने हाकी टीम दिखाई दे। साथ ही हाकी की खोई हुई प्रतिष्ठा उसे फिर प्राप्त हो जाए। यह बात केवल हाकी के लिए ही नहीं है बल्कि यह बात भारत के सभी खेलों के लिए है। साथ ही भारतीय फिल्म निर्देशकों को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे भी समय-समय पर ऐसी फिल्में बनाए जो लोगों के इरादों को पुख्ता करें और उनमें आत्मविश्वास का संचार करे। वैसे यह फिल्म एक साथ कई बातों को दिखाती है कैसे एक टीम का चयन होता है और किस प्रकार से खिलाड़ियों को खेल के माध्यम से राजनीति भी सिखाई जाती है।

-राकेश नेगी, नैनीताल

बुजुर्गों का सम्मान होना चाहिए

माना जाता है कि भारत की शासन व्यवस्था लोकतांत्रिक है। लेकिन क्या वाकई में ऐसा है। मैं एक छात्र हूं और छात्र होने के नाते मुझे तो यही लगता है कि यह सब बातें केवल कहने के लिए हैं। आज का समय ऐसा है कि इसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस की कहावत ही सही दिखाई देती है। ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि आज कोई व्यक्ति सरकारी पद पर है तो वह उस कुर्सी पर अपना अधिकार समझता है। उसे फिर आम आदमी के दुख-सुख से कोई मतलब नहीं होता। अगर वह सरकारी नौकरी में आ जाता है तो उसमें एक प्रकार का घमण्ड आ जाता है। जिसके कारण अगर कोई उन्हें सही गलत के विषय में समझाए तो भी वह नहीं मानते हैं। बस अपनी ही चलाते हैं। अपनी बात मनवाने के लिए वे लड़ाई के लिए भी उतारू हो जाते हैं। हम छात्र हैं तो हमें भी जगह-जगह पर इस प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। हमें शायद उतना बुरा नहीं लगता क्योंकि हम तो नौजवान हैं लेकिन ये सरकारी कर्मचारी कभी-कभी तो वरिष्ठ नागरिकों तक को नहीं छोड़ते हैं। ऐसा हम कई बार बसों में, रेलवे स्टेशनों पर और अन्य सरकारी कार्यालयों में देखते रहते हैं। लेकिन कोई इनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं करता है। आखिर कब तक ऐसे ही चलता रहेगा। सरकारी सेवा में रहने वाले लोगों को यह सोचना चाहिए की उन्हें जो नौकरी दी गई है वह नौकरी लोगों की सेवा के लिए ही दी गई है अगर वे अपने पद का सही इस्तेमाल नहीं कर सकते तो उन्हें कोई हक नहीं कि वो उस पर रहें। अत: मैं सभी लोगों से यह अनुरोध करूंगा की वो अपनी सेवा से सभी के कष्टों को दूर करें न कि उनके कष्टों को बढ़ाएं।

-धनीराम, कटवरिया सराय, दिल्ली

थोड़ा और आगे बढ़ें

कहने को भारतीय समाज की रीढ़ किसान हैं। अगर किसानों पर अत्याचार होता रहेगा तो इस समाज का क्या हाल होगा। यह इसलिए भी बताना आवश्यक है कि कोई भी देश तभी तरक्की करता है जब हम उस देश की मूलभूत बातों पर ध्यान दें। कोई भी देश उन्नति के पथ पर तभी आएगा जब कोई उसका आधार सही हो। हाल ही सेज की वजह से और भी कई कारणों से किसान के ऊपर जिस तरह के जुल्म देखने को मिले वह भारतीय लोकतंत्र के लिए कतई ठीक नहीं है। किसान ही समाज के बुनियाद को मजबूत करने वाले हैं। लेकिन अगर हम किसानों के प्रति ऐसा रवैया रखेंगे तो क्या भारत तरक्की कर पाएगा। आज हमें यह ध्यान देना होगा कि किसान को पूरी सहूलियत मिले जिससे वह अपना कार्य समय पर करे। साथ ही वह अपने परिवार का भी पालन पोषण कर सके जिससे कि उसे दुख और कष्ट न उठाना पड़े। पूरा देश तभी उन्नति करेगा जब किसानों पर ध्यान दिया जाएगा। और सरकार भी उनके लिए ठीक से कदम उठाए। यह तभी संभव है जब सरकार नए तरीके अपनाए और किसानों को उनके अनाज का, उसकी मेहनत का सही मूल्य चुकाए। साथ ही किसानों को भी अपनी खेती के रख-रखाव के ठीक प्रकार से ध्यान रखे। हो सकता है कि इस तरह के ठोस कदम का हमें फायदा हो और हम शायद सफलता के पथ पर थोड़ा और आगे बढ़ें।

-अनिल ठाकुर, इलाहाबाद

विवाद से बचें, विकास पर ध्यान दें

देश के सामने इस समय दो बड़ी समस्याएं हैं जिनको लेकर लगातार विवाद चल रहा है। इन दोनों को लेकर सबसे बड़ी परेशानी में सरकार है जिसके समझ में नहीं आ रहा है कि वह कैसे इससे उबर सकती है। एक है राम सेतु और दूसरा परमाणु करार। राम सेतु तो फिर भी बहुत कठिनाई नहीं पैदा कर सकता लेकिन परमाणु करार पर यहां तक अटकलें लगाई जा रही हैं कि इस पर सरकार जा भी सकती है और नए चुनाव भी संभव हो सकते हैं। लेकिन इसका दूसरा पहलू यह है कि इन सवाल को हर कोई एकतरफा तरीके से सोच रहा है। ऐसा लग ही नहीं रहा है कि समग्रता में विचार करने को कोई तैयार है। एक तर्क जो सबसे मजबूती के साथ सामने आ रहा है और जो किसी भी समस्या के संदर्भ में देखा जाना चाहिए वह है विकास खासकर देश के विकास से जुड़ा है। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं होना चाहिए कि हम विकास के नाम पर कुछ भी करें अथवा किसी को कुछ भी करने की छूट प्रदान कर दें। दुर्भाग्य से दोनों ही मामलों में इसी तरह का काम हो रहा है। राम और उनके महत्व को कोई न नकार रहा है और न ही बिना वैज्ञानिक आधार के नकारना चाहिए। लेकिन यह भी नहीं होना चाहिए कि आस्था के नाम पर सब कुछ भुला दिया जाए। कुछ लोग यही कह और कर रहे हैं कि राम के आगे कुछ भी नहीं। आखिर जीना, खाना और रहना भी तो है। क्या इन चीजों के लिए और कुछ नहीं चाहिए। क्या पर्यावरण का कोई मतलब नहीं होना चाहिए या इसके बिना भी हमारा काम चल सकता है। क्या देश को वहीं खड़े रहना चाहिए जहां वह हजारों साल पहले था। इस पर भी संजीदगी के साथ सोचना चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं होना चाहिए कि राम को दरकिनार कर दिया जाए जैसा कि सरकार ने अपने पहले हलफनामे में किया था। यह तो अच्छा हुआ कि सरकार को सद्बुद्धि आई और उसने उसे वापस ले लिया। अभी भी इसको लेकर विवाद चल ही रहा है। होना यह चाहिए कि इस मामले को बिना अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बनाए मिल बैठकर सभी संबंधित पक्ष कोई ऐसा तरीका निकालें जिससे राम का भी आदर हो सके और देश के विकास के लिए आवश्यक सेतु समुद्रम परियोजना पर भी काम हो सके। परमाणु करार का सवाल भी कम पेचीदा नहीं है। जो लोग यह तर्क दे रहे हैं कि हमें अपनी संप्रभुता से सौदा करना चाहिए और साम्राज्यवादी ताकतों के आगे घुटने नहीं टेकना चाहिए, निश्चित रूप से उनकी बात में काफी दम है। लेकिन इसे क्या कहा जाए कि उन्हीं के संगी-साथी यह वकालत भी कर रहे हैं कि देश को परमाणु की जरूरत है और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। इसके बावजूद रोज यह धमकी भी दी जा रही है कि अगर सरकार आगे बढ़ती है तो उसे जाना भी पड़ सकता है। किसी सरकार का जाना कोई सामान्य बात नहीं होती। यह देश से जुड़ा हुआ सवाल होता है। यह अलग बात है कि हमारे देश की राजनीतिक पार्टियां इस पर कभी जिम्मेदारी से काम नहीं करतीं। उनके लिए इसका मतलब सिर्फ सत्ता से होता है। हां, चुनियादी सवालों पर जरूर बहस होनी चाहिए और वह भी जिम्मेदारी से होनी चाहिए लेकिन इसके लिए संसद न चलने देना अथवा सरकार गिरा देना समस्या का कोई समाधान नहीं होगा। यद्यपि सरकार यह कह रही है कि उसने देश के हितों के खिलाफ कोई समझौता नहीं किया है और संप्रभुता को किसी भी तरह का खतरा नहीं, इसके बावजूद उस पर किसी को अगर विश्वास नहीं हो पा रहा है तो इसके पीछे कारण यही है कि सरकारों की करनी और कथनी में हमेशा अंतर रहा है। अगर इस मामले में भी यही हो रहा होगा तो इसे कत्तई अक्षम्य कहा जाएगा। यह अच्छी बात है कि दोनों ही मामलों में किसी भी पक्ष द्वारा कोई ऐसा कदम नहीं उठाया जा रहा है जिससे यह लगे कि कोई बड़ा बवाल खड़ा करने जा रहे हैं। होना यह चाहिए कि इस तरह के मामलों में देश की जनता को भी शामिल किया जाए और उसकी राय जानी जाए कि आखिर वह क्या चाहती है। यद्यपि इसके लिए अभी तक कोई तरीका नहीं विकसित किया जा सका है लेकिन यह काम भी करना होगा। होता यह है कि सरकारें चुन ली जाती हैं और फिर वे जनादेश के नाम पर मनमानी करने लगती हैं। वे यह भूल जाती हैं कि जनता का भी कोई मतलब होता है। जनता को नकार कर किया गया कोई भी काम उचित नहीं कहा जा सकता। इसलिए इन मामलों में उसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि देश को और भी बहुत सारी चीजों की जरूरत है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। देश के विकास के लिए और भी बहुत कुछ किया जाना है। ज्यादा अच्छा यह होगा कि सभी लोग इस दिशा में सोचें और भारत को दुनिया का विकसित देश बनाने के लिए काम करें। इसी में देश की भी भलाई है और जनता की भी। विवादों से बचने में ही सब कुछ निहित है।

सरकार यह कह रही है कि उसने देश के हितों के खिलाफ कोई समझौता नहीं किया है और संप्रभुता को किसी भी तरह का खतरा नहीं, इसके बावजूद उस पर किसी को अगर विश्वास नहीं हो पा रहा है तो इसके पीछे कारण यही है कि सरकारों की करनी और कथनी में हमेशा अंतर रहा है। अगर इस मामले में भी यही हो रहा होगा तो इसे कत्तई अक्षम्य कहा जाएगा।

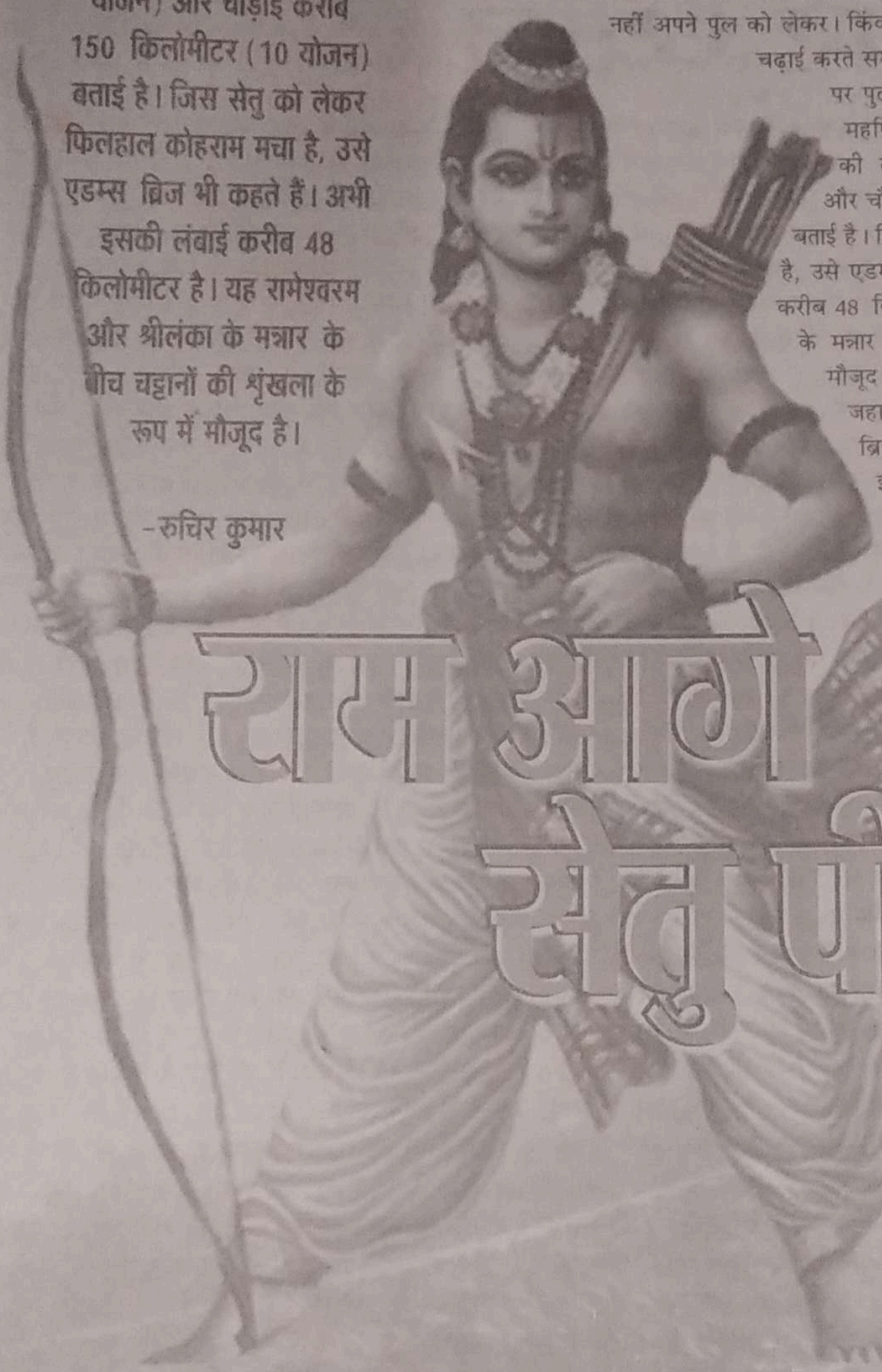

राम आगे सेतु पीछे

महर्षि वाल्मीकि ने अपने रामायण में इस सेतु की लंबाई 1500 किलोमीटर (100 योजन) और चौड़ाई करीब 150 किलोमीटर (10 योजन) बताई है। जिस सेतु को लेकर फिलहाल कोहराम मचा है, उसे एडम्स ब्रिज भी कहते हैं। अभी इसकी लंबाई करीब 48 किलोमीटर है। यह रामेश्वरम और श्रीलंका के मन्नार के बीच चट्टानों की शृंखला के रूप में मौजूद है।

-रुचिर कुमार

मिथकीय नायकों में राम भले ही मर्यादा पुरुषोत्तम, धीर और वीरोचित गुणों से संपन्न हों लेकिन उनका चरित्र रचने वालों ने ही उनको अभिशप्त भी बनाया है। वनवास से लेकर सीता की अग्नि परीक्षा तक राम सदा अभिशप्त ही रहे हैं। तब की चाहे जो हो लेकिन मौजूदा दौर में राजनीति ने राम को खासा हलकान कर रखा है। इस बार फिर राम सुर्खियों में हैं, खुद तो नहीं अपने पुल को लेकर। किंवदंती के अनुसार भगवान राम ने लंका पर चढ़ाई करते समय रामेश्वरम में वानरों की मदद से समुद्र पर पुल बनवाया था।

महर्षि वाल्मीकि ने अपने रामायण में इस सेतु की लंबाई 1500 किलोमीटर (100 योजन) और चौड़ाई करीब 150 किलोमीटर (10 योजन) बताई है। जिस सेतु को लेकर फिलहाल कोहराम मचा है, उसे एडम्स ब्रिज भी कहते हैं। अभी इसकी लंबाई करीब 48 किलोमीटर है। यह रामेश्वरम और श्रीलंका के मन्नार के बीच चट्टानों की शृंखला के रूप में मौजूद है। बहरहाल, कारोबार को बढ़ाने और जहाजी सफर को आसान बनाने के लिए एडम्स ब्रिज के कुछ हिस्से को तोड़ा जाना है। इस इलाके में समुद्र उथला है लिहाजा उसे गहरा करने के लिए यह जरूरी है। दिक्कत भी यहीं से शुरू होती है। राम मिथक हैं, करोड़ों लोगों की आस्था के आधार हैं तो उनके नाम से जुड़ा कुछ भी पल भर में भावनाओं का उफान पैदा कर देता है। फिर भाजपा और विहिप जैसी दुकानें हों, जिन्होंने राम को राजनीति के कारोबार में बिकाऊ माल की तरह पेश किया हो तो यह काम और भी आसान हो जाता है।

इस ड्रामे का एक खास किरदार केंद्र सरकार भी है, जिसे सेतु समुद्रम परियोजना पूरा करना है। मामले की शुरुआत से ही झोल नजर आता है। सबसे पहले तो राम सेतु या एडम्स ब्रिज की भौगोलिक स्थिति के बारे में वैज्ञानिक तथ्य पेश किए गए। यहां तक तो गनीमत है, फिर राम की ऐतिहासिकता को सवालों के बौछार में भिगो दिया गया। जाहिर है कि चिंगारी तो सुलगनी ही थी। एक बात बहुत साफ तौर पर समझ लेनी चाहिए कि

सेतु समुद्रम है क्या?

वैसे तो वह मुद्दा ही पीछे चला गया जिसको लेकर विवाद शुरू हुआ था और उसका स्थान ले लिया किसी और विषय ने। विकास की बात की जगह आस्था ने ले ली। इसके बावजूद यह जान लेना जरूरी है कि आखिर सेतु समुद्रम परियोजना है क्या? सेतु समुद्रम एक ऐसी महत्वाकांक्षी परियोजना का नाम है जो बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के बीच समुद्री मार्ग को सीधी आवाजाही के लिए खोल देगी। इस मार्ग के शुरू होने से जहाजों को चार सौ समुद्री मीलों की यात्रा कम करनी होगी जिससे लगभग 36 घंटे समय की बचत होगी। इस समय इसके लिए जहाजों को श्रीलंका की परिक्रमा करके जाना होता है। भारत और श्रीलंका के पर्यावरणवादी संगठन इस परियोजना का विरोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि इस परियोजना से पाक स्ट्रेट और मनार की खाड़ी में समुद्री पर्यावरण को नुकसान पहुंचेगा। भारत सरकार इस तर्क से सहमत नहीं है।

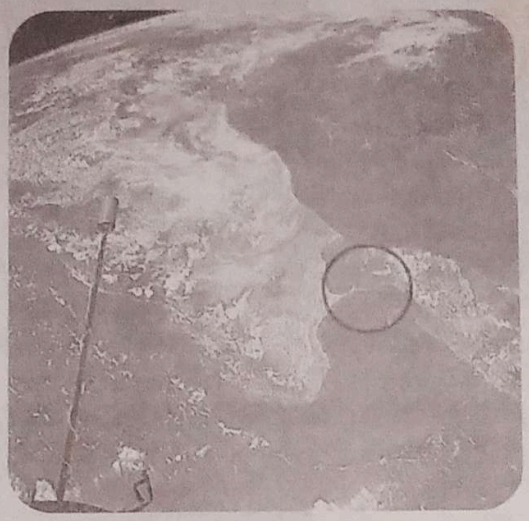

भारत और श्रीलंका के बीच से गुजरने वाली इस परियोजना का प्रस्ताव 1860 में भारत में कार्यरत ब्रितानी कमांडर एडी टेलर ने रखा था। इसी प्रस्ताव पर 135 वर्षों बाद अमल होने जा रहा है। लगभग ढाई करोड़ की इस परियोजना के लिए भारत सरकार ने स्वेज नहर प्राधिकरण के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। स्वेज नहर प्राधिकरण सेतु समुद्रम शिपिंग चैनल प्रोजेक्ट (एसएससीपी) का निर्माण करेगा, इसे संचालित करेगा और इसकी देखरेख भी करेगा। यह चैनल 12 मीटर गहरा और तीस मीटर चौड़ा होगा। इसमें आने और जाने दोनों का मार्ग होगा।

इस परियोजना का स्वागत करने वालों में दक्षिण भारतीय राज्य हैं। तमिलनाडु का कहना है कि इस चैनल के शुरू होने से दक्षिण भारत में समुद्री तट पर व्यापार के अवसर बढ़ेंगे और आर्थिक विकास तेज होगा। उनका कहना है कि चूंकि तूतिकोरिन बंदरगाह यूरोप और मध्य पूर्व के बीच व्यापार के अंतरराष्ट्रीय मार्ग में आता है इसलिए यह अग्रणी बंदरगाह बन सकता है। उधर रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि इस परियोजना के शुरू होने के बाद से भारत को एक अच्छा नौसैनिक अड्डा मिलेगा और भारत की नौसेना दुनिया के सबसे मजबूत नौसेनाओं में से एक हो जाएगी। लेकिन दूसरी ओर इस परियोजना का विरोध भी हो रहा है। श्रीलंका इस परियोजना को लेकर चिंतित है और उसका मानना है कि इससे उसे उत्तर पूर्वी तट पर फर्क पड़ेगा। श्रीलंका ने इस परियोजना के अध्ययन के लिए मंत्रिमंडल की एक समिति का भी गठन किया है। भारत और श्रीलंका के कई पर्यावरणवादी संगठनों ने इसका विरोध करते हुए कहा है कि इससे समुद्र के संवेदनशील पर्यावरण को नुकसान पहुंचेगा। मछुआरों को आशंका है कि उस चैनल के शुरू होने से उनके मछली मारने की गतिविधियां समाप्त हो जाएंगी और मछलियों की संख्या भी कम हो जाएगी। हालांकि सरकार ने मछुआरों को आश्वासन दिया है कि इनके व्यवसाय पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

आस्था के सवाल वैज्ञानिक या पुरातात्विक साक्ष्यों से हल नहीं किये जा सकते। आस्था में तर्क-वितर्क की कोई जगह नहीं होती। ईसा मसीह की ऐतिहासिकता उनकी कब्र तलाशने से साबित नहीं की जा सकती। यहां तो सिर्फ और सिर्फ विश्वास ही आधार होता है। इन सवालों को पूरे नजाकत और संजीदगी के साथ बिना श्रद्धा पर चोट पहुंचाए ही सुलझाया जा सकता है। अपना मुल्क अभी भी इतना नहीं खुल पाया है कि मिथक और आराध्य देवों को बहस का हिस्सा बना सके। ईसाइयत में आज भी ईसा मसीह की मौत को लेकर बहस चल रही है लेकिन इसको लेकर कोई खास बवेला नहीं मचता। हाल के वर्षों में डॉन ब्राउन ने द विंची कोड में जब ईसा की मौत पर नए तथ्य पेश किए तो पश्चिम में धुंआधार बहस तो हुई लेकिन कोई तूफान नहीं बरपा। हिंदुस्तान में ऐसा फिलवक्त मुमकिन नहीं है। जाहिर है इसकी एक वजह जहालत भी है। फिर बंद दिमाग से खुली दुनिया देखी भी नहीं जा सकती।

दरअसल सारा घालमेल राम और रामसेतु को साथ मिलाने में है। दोनों के बीच फर्क करना होगा। राम आराध्य हैं सो उनको तर्क से परे मान लेना स्वाभाविक है लेकिन रामसेतु की पवित्रता तो महज इतनी है कि उसे राम ने बनवाया था। आख्यानों में राम से जुड़ी ढेरों चीजों के नाम आए हैं। यह भी सच है कि लोकगीतों और कथाओं में राम के इतने विविध रूप मिलते हैं कि राम एकबारगी आम आदमी की तरह दिखते हैं, तमाम कमजोरियों और अच्छाइयों के साथ। राम की वनवास यात्रा के साथ ही उनसे जुड़ी चीजें सामने आने लगती हैं। हालांकि अभी भी इस यात्रा का भौगोलिक साक्ष्य प्रस्तुत करना संभव नहीं है। मसलन मुंगेर (बिहार) में सीताकुंड, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे सीता के स्नान के लिए बनवाया गया था। इसी तरह सीता की रसोई भी है। सुदूर पूरब से लेकर दक्षिण तक ऐसे स्थान मिल जाएंगे, जिसका ताल्लुक राम से जोड़ा गया है। आखिर राम ने वनवास के दौरान तकरीबन पूरे भारत की यात्रा क्यों की? उनकी यात्रा का मार्ग क्या था? उस समय के भारत की भौगोलिक स्थिति क्या थी? ये सारे सवाल हैं जिन पर श्रद्धा से परे हट कर सोचा जाना चाहिए। विहिप का दावा है कि एडम्स ब्रिज ही रामसेतु है, जिसे साढ़े 17 लाख साल पहले बनवाया गया था। उधर वैज्ञानिकों का मानना है कि इस महाद्वीप पर तीन लाख साल पहले तक मनुष्य का अस्तित्व ही नहीं था। ऐसे में राम के साथ रामसेतु को भी पूज्य बना देना उचित नहीं है।

सोनिया बनीं चैंपियन

राम सेतु मामले पर विवाद का कारण बनी सरकार के लिए संप्रग अध्यक्ष सोनिया गांधी वरदान बन कर सामने आईं। इसके पहले भी कई ऐसे मौके आ चुके हैं जब सोनिया ने सरकार को मुश्किलों से उबारा। इस बार समस्या तब खड़ी हुई जब सरकार की ओर से राम सेतु मामले पर दायर हलफनामे में राम को ही एक तरह से नकार दिया गया। पहले कोई कम बवाल नहीं हो रहा था, इस हलफनामे ने तो सरकार और यहां तक कि कांग्रेस के लिए भी नई मुसीबत खड़ी कर दी। अगर सब कुछ सरकार के ही हिसाब से ही चलता रहता तो शायद परिस्थितियां काफी जटिल हो जातीं। इसे समझदारी वाला कदम ही कहा जाना चाहिए कि सोनिया गांधी ने हालात की गंभीरता को समझा और सरकार को उसके द्वारा की गई गलती का अहसास कराया। इसके तुरंत बाद सरकार की ओर से न सिर्फ यह कहा गया कि हलफनामे में उसकी ओर से गलती हुई है बल्कि जल्द ही उसे वापस ले लिया गया। असल में गलती करना बड़ी बात नहीं होती, खराब बात यह होती है कि उसे न मानना और उसमें सुधार न करना। इसे अच्छा ही कहा जाएगा कि सरकार ने अपनी गलती मान ली। इसमें कोई दो राय नहीं कि राम के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। यह भले ही सिर्फ का आस्था का सवाल हो लेकिन एक सच्चाई भी है। दुनिया राम को मानती है तो यह कैसे संभव हो सकता है कि उनके अस्तित्व को ही नकार दिया जाए। इस तरह के मामले ही हैं जो सोनिया गांधी को आज के अन्य नेताओं से अलग करते हैं और यह बताते हैं कि उनके भीतर राजनीतिक समझदारी है और उन्हें पता है कि देश को कब किसकी जरूरत होती है। किसी भी राजनीतिज्ञ को यह समझना चाहिए कि संकट के समय वह समझदारी से काम ले और देश को समस्याओं से बचाकर आगे ले जाने के बारे में सोचे व काम करे। सोनिया गांधी ने एक बार फिर यह कर दिखाया है। भले ही केवल इतने से राम सेतु से जुड़ा विवाद हल न हो सके लेकिन इतना तो हुआ कि एक अन्य विवाद से छुटकारा पा लिया गया। अगर ऐसा न होता तो अभी तो कांग्रेस के भीतर एक मंत्री अंबिका सोनी को लेकर तूफान चल रहा है वह ता नहीं किस रूप में लोगों के सामने होता। इससे यह भी पता चलता है कि खुद कांग्रेस के भीतर इस मामले पर एक राय नहीं है। यह देखने की बात होगी कि कांग्रेस अपने भीतर चल रहे विवाद को किस तरह से हल करती है। फिलहाल तो पार्टी के भीतर अंबिका सोनी को लेकर विवाद सुलझता ही दिखाई दे रहा है। लगता नहीं कि उनका इस्तीफा होने जा रहा है।

ताजा विवाद की वजह

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि राम सेतु के ऐतिहासिक और पुरातात्विक अवशेष होने के कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं। कोर्ट को सौंपे गए अपने हलफनामे में एएसआई ने कहा था कि एडम्स ब्रिज के नाम से प्रचलित इस कथित सेतु को अब तक पुरातात्विक अध्ययन के योग्य भी नहीं माना गया है। उल्लेखनीय है कि पूर्व केंद्रीय मंत्री और जनता

पार्टी के नेता सुब्रहमण्यम स्वामी की एक याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सेतु को तोड़ने पर रोक लगा दी थी और एएसआई को इस बारे में जवाब पेश करने को कहा था। एएसआई के निदेशक (स्मारक) सी दोरजो की ओर से दायर किए गए शपथपत्र में कहा गया है कि एडम्स ब्रिज को लेकर ऐसे कोई प्रमाण कभी नहीं जिससे एएसआई को इसका सर्वेक्षण करने की जरूरत महसूस हो। एएसआई ने तीस पृष्ठों के अपने जवाब में कहा है कि रामायण एक मिथकीय कथा है जिसका आधार वाल्मीकी रामायण और रामचरित मानस है। एएसाई ने कहा है कि ऐसा कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है जिससे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से इस कथा के प्रामाणिक होने और इस कथा के पत्रों के होने का प्रमाण मिलता हो। इसी रामायण कथा को आधार बनाकर हिंदू संगठन कह रहे हैं कि एडम्स ब्रिज दरअसल राम सेतु है और इसका निर्माण भगवान राम ने वानरों की मदद से किया था।

भाजपा की खुशफहमी बढ़ी

अभी कुछ महीने पहले ही देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा है। आने वाले समय में गुजरात और राजस्थान में जहां उसकी सरकारें हैं, हार का खतरा बना हुआ है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी उसकी हालत कमजोर होती दिख रही है। ऐसे में उसके लिए राम सेतु का मुद्दा कुछ संजीवनी से कम नहीं लग रहा है। हो भी क्यों नहीं, आखिर यह राम का ही नाम था जिसके बल पर कभी वह उत्तर प्रदेश में और फिर तमाम जोड़-तोड़ के बल पर देश की सत्ता पर आसीन हुई थी। अब एक बार फिर उसे यह लगने लगा है कि हवा का रुख इसकी ओर आ सकता है। राम भाजपा के सर्वप्रिय रहे हैं। वह उसकी नैया के खेवनहार रहे हैं। लेकिन उसके बाद के समय का अगर विश्लेषण किया जाए तो यह नहीं लगता कि राम की भाजपा पर कृपा अभी भी उसी तरह है जैसी राम मंदिर आंदोलन के समय थी। ऐसा हो भी नहीं सकता क्योंकि यह मामला अयोध्या से नहीं जुड़ा है जो हिंदी बेल्ट में था। यह उस दक्षिण से जुड़ा है जहां तक लाख कोशिशों के बावजूद भाजपा की पहुंच नहीं बन पाई। विवाद भी कोई ऐसा नहीं जो हर हिंदू को उस तरह छू सके जिस तरह मंदिर ने छुआ था। सबसे बड़ी बात यह कि राम के नाम पर भाजपा ने जो कुछ हिंदुओं से कहा था उसका अंश मात्र भी उसने नहीं किया। सरकार में आने के बाद भाजपा ने मंदिर को भी भुला दिया। इसका संदेश यह गया कि भाजपा ने हिंदुओं के साथ धोखा किया। उसका मकसद मंदिर बनवाना था ही बल्कि इस मुद्दे के माध्यम से उसका सपना सिर्फ बनाने का था और वह पूरा हो गया। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि यही कारण रहा है कि संघ और विहिप जैसे उसके प्रिय संगठन भी उससे किनारा करते गए। वे भी यह खुलकर कहने लगे थे कि भाजपा का अब हिंदुत्व से कोई लेना-देना नहीं रह गया है। पिछले कुछ चुनावों में तो उनका असहयोग भी देखने को मिला है। संघ तो फिर भी कभी-कभी भाजपा से अपनी नजदीकियां दिखाता रहता है लेकिन विहिप ने तो बहुत हद तक उससे किनारा कर लिया था।

अब एक बार फिर यह लगने लगा है कि राम सेतु के मामले पर संघ परिवार एकजुट होने लगा है। यही वह बिंदु है जिसे भाजपा अपने पक्ष में पा रहा है। इसके अलावा सरकार द्वारा राम के अस्तित्व को नकारने के बाद जिस तरह का विरोध सामने आया था उससे भी भाजपा को यह लगने लगा कि स्थितियां उसके पक्ष में आ रही है। यही कारण है कि लंबे समय से नेपथ्य पहुंचते दिख रहे रामरथी लालकृष्ण आडवाणी भी एक बार फिर अपनी अहमियत समझने लगे हैं। इसीलिए भाजपा की यह पूरी कोशिश है कि क्यों न इस मौके को पूरा लाभ उठाया जाए।

इसके लिए वह पूरे जी जान से लग भी गई है। अभी भोपाल में हुई पार्टी की बैठक में भी इस मुद्दे को जोरदार ढंग से उठाने की रणनीति बनाई गई। गुजरात में तो मोदी इसे चैंपियन बनाने की कोशिश शुरू ही कर चुके हैं।

भोपाल में भाजपा केंद्र में सत्तारूढ़ संप्रग सरकार पर जमकर बरसी। पार्टी अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि यह सरकार सांप्रदायिक राजनीति का ऐसा खौफनाक पिटारा खोल रही है जिससे देश की एकता और अखंडता तार-तार हो सकती है। सरकार हिंदू समाज के मान-सम्मान पर लगातार कुठाराघात कर रही है। संप्रग के घटक दल द्रमुक नेता करुणानिधि के राम संबंधी बयानो को क्रूर व वीभत्स बताते हुए राजनाथ सिंह ने कहा कि उन्हें अपने बयान वापस लेने चाहिए। इतना ही नहीं उन्होंने द्रमुक के सभी मंत्रियों को बर्खास्त करने की मांग भी की। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या संप्रग नेता अन्य धर्मावलंबियों के ईश्वर की प्रामाणिकता के बारे में वैसे गंभीर आपत्तिजनक सवाल उठा सकते हैं जैसे सुप्रीम कोर्ट में दायर हलफनामे और करुणानिधि के बयानों में उठाए गए हैं? राम के अस्तित्व को नकारने का दुस्साहस तो हजारों साल के गुलामी काल में किसी विदेशी शासक ने भी नहीं किया चाहे वह औरंगजेब हो या अंग्रेज। फिर यह सब इस कांग्रेस नेतृत्व की सरकार में क्यों हो रहा है? इसके पीछे कौन से कारण हैं? इसे कौन सी शक्ति संचालित कर रही है और वह शक्ति भारत के मूल स्वरूप को क्यों विकृत करना चाहती है? देश की जनता को इन सवालों का जवाब चाहिए। उन्होंने कांग्रेस से पूछा कि अगर राम थे ही नहीं तो फिर महात्मा गांधी का रामराज्य का सपना क्या खोखले आधार पर टिका छलावा था? उनका कहना था कि भगवान राम की अवमानना कर कांग्रेसनीत सरकार वोट बैंक की राजनीति के निम्नस्तर पर पहुंच गई है। यह सरकार मुस्लिम तुष्टिकरण पर चल रही है।

दरअसल राजनाथ सिंह यह सब कहते हुए मानकर चल रहे होंगे कि लोगों की आस्था भी उनकी ओर बढ़ रही है पर शायद यह उनका दिवास्वप्न ही साबित होगा क्योंकि अभी तक आम लोगों के बीच यह नहीं लग रहा है कि रामसेतु मुद्दे पर कुछ हो रहा है। लोग राम के अस्तित्व को अस्वीकारने को तो उचित नहीं मान रहे हैं लेकिन इस पर वे भाजपा के पक्ष में खड़े हो रहे हों, ऐसा नहीं दिखाई दे रहा है।

अंबिका सोनी पर जयराम का गुस्सा

राम ने जयराम को इस तरह क्रोधित कर दिया कि उन्होंने अपनी ही पार्टी की सदस्य और अपनी ही सरकार के अन्य मंत्री अंबिका सोनी से मांग लिया। इतना ही नहीं, वे तो यहां तक कह गए कि अगर वे संस्कृति मंत्री होते तो तुरंत इस्तीफा दे दिए होते। असल में मामला यह था कि हलफनामे के लिए चूंकि संस्कृति मंत्रालय जिम्मेदार था तो इसकी जिम्मेदारी संबंधित मंत्री अंबिका सोनी को ही जाती है। अब इसी ने जयराम को यह मौका दे दिया कि वे पूरी तरह सोनी के खिलाफ खड़े हो गए। जयराम का कहना नहीं था कि अंबिका सोनी भी सामने आ गईं और उन्होंने कह दिया कि अगर सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह कह दें तो वे तुरंत इस्तीफा दे देंगी। पहले तो लगा कि मामला कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है पर सब कुछ धीरे-धीरे खत्म होता दिखाई दे रहा है। यह इसलिए कहा जा सकता है कि सोनी सोनिया गांधी और मनमोहन सिंह से मिल चुकी हैं और अपनी सफाई भी दे चुकी हैं। लगता हैं उन्हें दोनों की ओर से क्षमादान मिल चुका है। लेकिन विपक्ष है कि वह मानता ही नहीं। वह लगातार इसकी मांग कर रहा है कि सरकार और कांग्रेस माफी मांगे और सोनी इस्तीफा दें। सरकार ने अपनी गलती की भरपाई के नाम पर ठीकरा अधिकारियों के सिर फोड़ चुकी है और इसी को इतिश्री मान चुकी है। इतना ही नहीं, इस आशय का आदेश भी जारी कर दिया गया कि मामले की जांच की जाएगी। इस विवाद में एक बात और उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के महासचिव दिग्विजय सिंह अंबिका सोनी के पक्ष में खड़े हुए और उनका काफी बचाव किया। फिलहाल कांग्रेस के भीतर का यह विवाद थमता नजर आ रहा है लेकिन इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता आगे चलकर यह किसी और रूप में सामने आए क्योंकि कोई न कोई अन्य बात जरूर होगी जिसकी वजह से जयराम रमेश की नाराजगी इतनी तल्खी से साथ सामने आई थी। देखना यह होगा कि आगे क्या होता है?

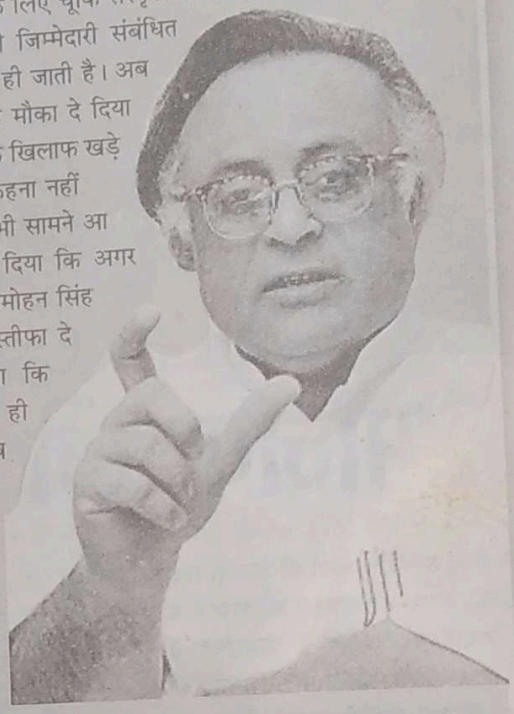

करुणानिधि का सिर भी संकट में पड़ा

अब इसे कोई कुछ भी कह सकता है लेकिन हुआ यही है कि करुणानिधि का सिर मांग लिया गया। यह अलग बात है कि बाद में सफाई दी गई कि सिर मांगने की बात गलत तरीके से पेश की गई। मामला दरअसल यह था कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि ने यह कह दिया था कि कुछ लोग कहते हैं कि सत्रह लाख साल पहले एक व्यक्ति हुआ था जिसका नाम राम था। उनके द्वारा निर्मित सेतु को नहीं छुएं। कौन हैं यह राम, किस इंजीनियरिंग कालेज से उन्होंने पढ़ाई की, क्या इसका कोई सबूत है ? जाहिर सी बात है कि किसी को भी इस तरह की बात नहीं करनी चाहिए। लेकिन अगर मान लीजिए किसी ने कह भी दिया तो एक लोकतांत्रिक देश में उसके सिर की मांग किया जाना उचित कहा जाएगा। विचार किसी का कुछ भी हो सकता है, इससे यह नहीं माना जा सकता है कि वह ठीक ही कह रहा है। इसके अलावा किसी के कहने से सच्चाइयां नहीं समाप्त हो जातीं। आप उसकी आलोचना कर सकते हैं। निंदा कर सकते हैं। कार्रवाई की मांग कर सकते हैं लेकिन हिंसा का सहारा लेना किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जाएगा। दुर्भाग्य से ऐसा हो रहा है।

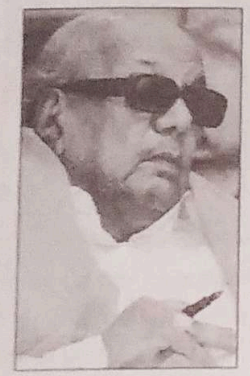

बालू नहीं बदलेंगे मार्ग

केंद्रीय जहाजरानी मंत्री टीआर बालू की बात अगर मानी जाए तो यही लगता है कि सेतु समुद्रम परियोजना का मार्ग बदला नहीं जाएगा। वे तो यहां तक मानते हैं कि राम सेतु भारत के नक्शे में कही है ही नहीं। ऐसा उन्होंने चेन्नई में पत्रकारों के साथ बातचीत में कहा है। उनका कहना है कि सेतुसमुद्रम जहाजरानी नहर परियोजना भाजपा नीत राजग सरकार के कार्यकाल में अंतिम रूप दिया गया था। मौजूदा सरकार केवल इसे लागू कर रही है। उन्होंने इस मुद्दे पर विपक्ष द्वारा लोगों को भड़काने का आरोप लगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और संप्रग अध्यक्ष सोनिया गांधी सहित केंद्र सरकार का कोई अधिकारी किसी धार्मिक भावना की ठेस नहीं पहुंचाना चाहता। हमारा मंत्रालय सेतु समुद्रम परियोजना के मामले में सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करेगा। सुप्रीम कोर्ट में केंद्र द्वारा दाखिल हलफनामे को लेकर उठे विवाद पर उन्होंने कहा कि हलफनामा भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग द्वारा तैयार किया गया था। इसमें उनके मंत्रालय की कोई भूमिका नहीं है। परियोजना के अंतरगत गाद निकालने का काम रोकने की खबरों पर बालू ने कहा कि केवल एडम्स ब्रिज क्षेत्र से गाद निकालने वाले जहाज हटाए गए हैं। पाक जलडमरू मध्य में काम अभी भी जारी है।

11/36

चुनाव का दिवास्वप्न

■ संध्या शुक्ला

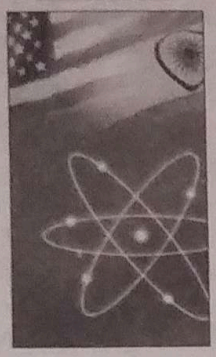

अमेरिका के साथ परमाणु करार को लेकर पिछले दिनों जिस तरह की राजनीतिक गतिविधियां देखी गईं और संसद सत्र नहीं चलने दिया गया, उसके बाद से ही इस तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं कि देश मध्यावधि चुनाव के रास्ते पर जा रहा है।

अमेरिका के साथ परमाणु करार को लेकर पिछले दिनों जिस तरह की राजनीतिक गतिविधियां देखी गईं और संसद सत्र नहीं चलने दिया गया, उसके बाद से ही इस तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं कि देश मध्यावधि चुनाव के रास्ते पर जा रहा है। कुछ लोग तो इसका सपना भी देखने लगे हैं और तैयारी में भी जुट गए लगते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या वाकई ऐसी स्थितियां उत्पन्न हो गई हैं? दरअसल सबसे मजबूत आधार के रूप में पेश किया जा रहा है वामपंथी पार्टियों का विरोध। वामपंथी पार्टियां सरकारी की समर्थक हैं। उन्हीं के समर्थन की बदौलत सरकार बहुमत में है। वही वामपंथी पार्टियां लगातार धमकी दे रही हैं कि अगर सरकार परमाणु करार पर आगे बढ़ती है तो इसका दंड उसे भुगतना पड़ेगा। बस यही बात देश की मुख्य विपक्षी पार्टी भारतीय जनता पार्टी को यह अहसास करा रही है कि देश में मध्यावधि चुनाव अवश्यवंभावी हो गया है।

आइए देखा जाए कि क्या वाकई ऐसा होने जा रहा है। इस मामले में सबसे बड़ा पेंच यह सामने आ रहा है कि क्या वामपंथी पार्टियां ऐसा कोई काम करेंगी जिससे उन ताकतों को मौका मिल जाए जिनके खिलाफ वे लगातार लड़ती आ रही हैं और जिन्हें वे देश के लिए सबसे बड़ा दुश्मन मानती हैं। कहना होगा कि ऐसा वे किसी भी हालत में नहीं चाहेंगी। इसके अलावा एक दूसरा बिंदु यह है कि वामपंथी पार्टियों की अपनी जमात में भी इस मामले पर एक राय नहीं है कि करार नहीं किया जाना चाहिए। इस बारे में सबसे महत्वपूर्ण परिघटना यह सामने आई है कि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता और पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु कभी यह नहीं चाहेंगे कि यह सरकार गिरे और भाजपा की सरकार बने। अब वर्तमान मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य भी खुलकर सामने आ गए हैं। वे अपनी पार्टी लाइन के खिलाफ जाकर यह कहने लगे हैं कि परमाणु की भारत को सख्त जरूरत है और इसके बिना देश का काम नहीं चल सकता। वे तो यहां तक कह जाते हैं कि हमें अमेरिका की अंध आलोचना नहीं करना चाहिए और परिस्थितियों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। अगर हमें विकास करना है और देश को आगे ले जाना है जो समय के अनुरूप बदलना भी चाहिए।

यह सही है कि अमेरिका एक मजबूत साम्राज्यवादी ताकत है और उसके अपने हित होते हैं जो किसी भी तरह से भारत के साथ मेल नहीं खाते। पूर्व में यह देखा भी गया है कि वह कभी भी भारत का हितैषी नहीं रहा है। उसकी सारी कोशिशें अपने साम्राज्य के विस्तार की रही है। अन्य विकासशील देशों में भी जिस तरह वह कब्जे की नीति अपनाता रहा है, उसे भी किसी भी तरह से उचित नहीं कहा जा सकता। अब यह मामला चाहे इराक का हो अथवा ईरान का या अन्य विकासशील का हो। पूर्व का इतिहास भी उसका कोई बहुत अच्छा नहीं रहा है। पाकिस्तान के साथ वह जिस तरह का संबंध रखता है वह भी भारत के लिए कोई कम चिंता का विषय नहीं रहता। ऐसे में अगर वह भारत के साथ परमाणु करार के लिए उतावला है तो यह आसानी से समझा जा सकता

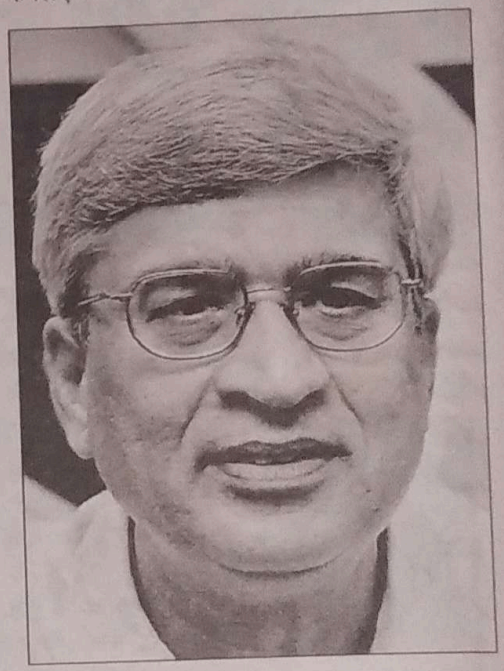

है कि वह क्या चाहता है। लेकिन इस बात को भी तो समझना होगा कि तेजी से बदलती दुनिया में क्या भारत को पुरानी लकीरों पर ही चलते रहना चाहिए अथवा अपने हितों की रक्षा के लिए आगे भी बढ़ना चाहिए। लगता है कि भारत सरकार की यही नीति है कि वह अपने को मजबूत बनाने के लिए ही परमाणु करार की दिशा में आगे बढ़ रही है। देश को परमाणु की जरूरत भी है इससे किसी को इनकार नहीं हो सकता है। यह जरूर देखने की बात है कि ऐसा करते हुए देश की संप्रभुता के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया जाना चाहिए। शायद यही चिंता वामपंथियों की है और इसे गलत नहीं माना चाहिए।

कम्युनिस्ट कभी यह नहीं चाहेंगे कि देश में उन लोगों का शासन कायम हो जाए जिसके वे जन्मजात विरोधी रहे हैं। शायद इसीलिए हर धमकी के बाद उनकी ओर से यह भी कहा जाता है कि उनकी मंशा सरकार गिराने की नहीं है। वह तो सिर्फ यह चाहते हैं कि सरकार अमेरिका के आगे घुटने न टेकें।

दरअसल भारतीय जनता पार्टी को यह तब से लगने लगा है जबसे कम्युनिस्ट पार्टियां यह कहने लगी हैं कि अमेरिका के साथ परमाणु करार उन्हें किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है। कम्युनिस्ट पार्टियों के लिए अमेरिका हमेशा से दुश्मन रहा है। उनकी राजनीति में भी यह प्रारंभ से ही शामिल रहा है कि वे अमेरिका के खिलाफ हमेशा खड़े होते रहे हैं। अब वह चाहे वियतनाम का मामला रहा हो अथवा ईराक और इरान।

जहां कहीं भी अमेरिका ने दखलंदाजी की, भारत के कम्युनिस्ट उसके खिलाफ खड़े हो गए। यद्यपि इसमें कोई बुराई भी नहीं है क्योंकि अमेरिका जिस तरह अपनी दादागीरी के माध्यम से पूरी दुनिया पर शासन करने की सोचता रहता है, उसे न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता। इसलिए उसके साम्राज्यवादी चरित्र का विरोध किया ही जाना चाहिए और अगर कम्युनिस्ट यह करते हैं तो इसमें कोई बुराई नहीं है। लेकिन यह भी देखने की बात है कि सिर्फ अंध आलोचना अथवा विरोध नहीं होना चाहिए और यह भी सोचना चाहिए कि कहीं एकतरफा विरोध की वजह से हमारे हितों को नुकसान न पहुंचे। लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है कि कम्युनिस्ट कभी यह नहीं चाहेंगे कि देश में उन लोगों का शासन कायम हो जाए जिसके वे जन्मजात विरोधी रहे हैं। शायद इसीलिए हर धमकी के बाद उनकी ओर से यह भी कहा जाता है कि उनकी मंशा सरकार गिराने की नहीं है। वह तो सिर्फ यह चाहते हैं कि सरकार अमेरिका के आगे घुटने न टेके। अभी कुछ दिनों पहले माकपा की ओर से यह कहा गया कि करार को छह महीने तक मुल्तवी कर दिया जाए। उसके कुछ दिनों बाद ही माकपा महासचिव ने यह कहा कि वर्तमान सरकार 2009 तक चलेगी। ऐसे में यह लगता नहीं कि किसी भी रूप में यह माना जाए कि कम्युनिस्ट पार्टियां सरकार को गिराने का जोखिम उठाने के लिए तैयार हैं।

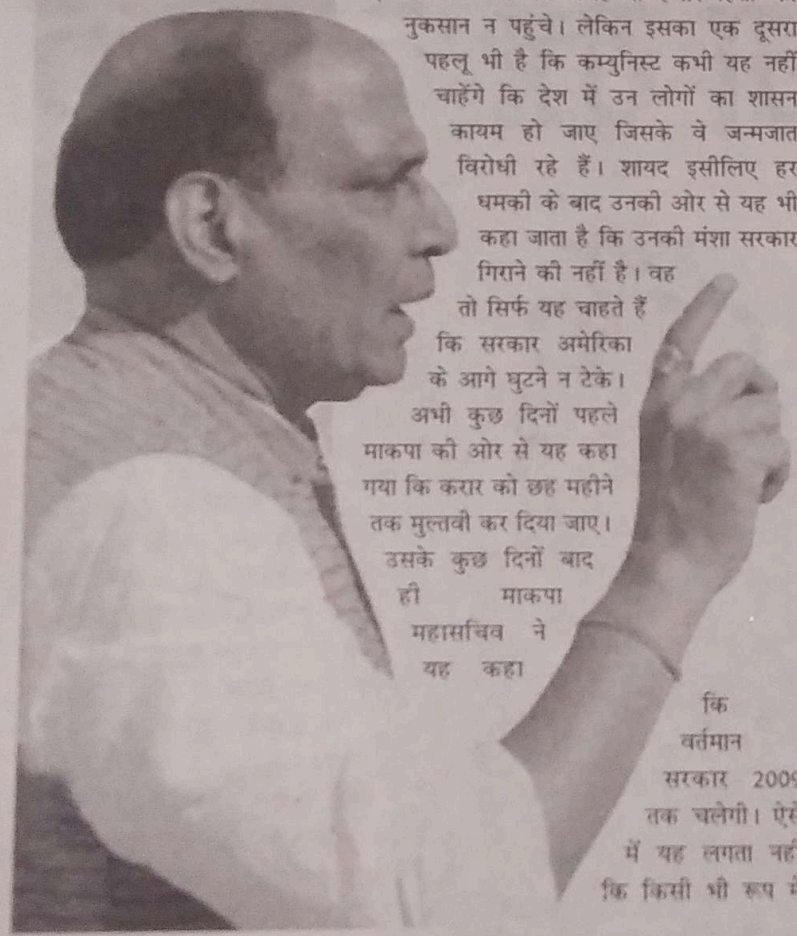

अब यह देखने की बात है कि आखिर भाजपा चुनाव के लिए इतनी उतावली क्यों है। असल में वह भी यह जानती है कि कम्युनिस्ट वह करने नहीं जा रहे हैं जो वह धमकाते रहते हैं। इसीलिए वह उन्हें उकसाने का काम भी यदा कदा करती रहती है। दूसरे यह कि उसे लगता है कि अगर वर्तमान सरकार अल्पमत में आ जाए तो उसकी कोशिश कुछ जोड़-तोड़ कर सरकार बनाने की होगी। ऐसा इसलिए कि उसे भी पता है कि अगर चुनाव होते भी हैं तो उसे कोई लाभ नहीं मिलने नहीं जा रहा है।

किसी भी राज्य में हाल के दिनों में उसकी स्थिति कोई मजबूत होती नहीं दिख रही है। जहां वह सत्ता में है वहां भी हालात बदतर ही हैं। ऐसे में वह खुद भी नहीं चाहेगी कि इस समय चुनाव कराए जाएं लेकिन राजनीति की भी तो कुछ मजबूरियां होती हैं और वही भाजपा झेल रही है। वह अपने कार्यकर्ताओं को चुनाव के लिए तैयार रहने को कहते हुए उन्हें यह भरोसा दिलाना चाहती है कि उसकी स्थिति उतनी खराब नहीं है जितना प्रचारित किया जा रहा है। वह यह बताना चाहती है कि उसकी स्थिति मजबूत है और चुनाव जीत सकती है। लेकिन क्या इसे सही माना जा सकता है। कम से कम पिछले दिनों कराए सर्वेक्षणों से तो ऐसा नहीं लगता। इस बीच जितने भी सर्वेक्षण करवाए गए हैं उनमें यही निष्कर्ष सामने आया है कि अगर अभी और इन हालात में चुनाव करवाए जाते हैं तो इसका सीधा फायदा कांग्रेस को ही ज्यादा मिलने वाला है। यह सही है कि सर्वेक्षण अक्सर गलत भी साबित होते हैं लेकिन यह भी देखने की बात है कि इस समय कोई ऐसा सामने नहीं है जिससे लोगों में इस सरकार के खिलाफ कोई बहुत गुस्सा हो। यह भी नहीं है कि परमाणु करार के मुद्दे पर जनता सरकार के सख्त खिलाफ खड़ी हो।

काफी प्रयासों के बाद भी भाजपा और संघ परिवार रामसेतु मुद्दे को हवा नहीं दे पाया कि उससे जनमत उसके पक्ष में जाता दिखाई दे रहा हो। राम नाम के जाप का लाभ भी उस तरह भाजपा को उस तरह नहीं मिलता दिखाई दे रहा है जैसा अयोध्या में जमाने में दिखा था। ऐसे में भाजपा का चुनाव का राग कोई खास असर दिखाता नहीं लग रहा है। अगर इन सारी परिस्थितियों पर नजर डाली जाए तो लगता नहीं कि निकट भविष्य में चुनाव होने वाले हैं।

हमारे युग का नायक

इसे कहते हैं खेल और जीतने का जज्बा। जब इस वर्ल्ड कप के लिए धोनी को कप्तान के रूप में चुना गया था और टीम बनाई गई थी तब बहुत लोग ऐसे थे जिन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि नए रंगरूटों से क्या होगा? आप वर्ल्ड कप खेलने जा रहे हैं और उसमें सचिन, सौरभ और द्रविड़ जैसा कोई भी धुरंधर नहीं है। लेकिन जो हुआ वही होना चाहिए था। इसी टीम ने वह कर दिखाया जिसको लेकर बहुतों के मन में संदेह था। कल तक हमारे पास एक कपिलदेव थे। आज हमारे पास दूसरा पास कपिलदेव भी धोनी के रूप में है। धोनी ने वह कर दिखाया जिसकी हर भारतवासी और क्रिकेट प्रेमी की चाहत थी।

दुनिया भर के एक से एक धुरंधरों को नाको चने चबवाते हुए हमारे रणबांकुरों ने आगे का रास्ता बनाया। हालांकि यह रास्ते भी कम घुमावदार नहीं थे पर सबसे निकलने का रास्ता खोजते वे आगे बढ़ते गए क्योंकि उनके मन में पहले से ही यह बैठा हुआ था कि उन्हें इसे जीतना है। जब दर्शक और क्रिकेट के पंडित इस जोड़-घटाने में लगे थे कि कैसे भारतीय टीम सुपर एट में पहुंच सकती है तब खिलाड़ी वह हर दांव आजमा रहे थे जिससे वहां तक आसानी से पहुंच सकें। वही हुआ भी काफी जद्दोजहद के माध्यम से वह मुकाम हासिल किया जा सका। इसी तरह सेमीफाइनल में जीतने को लेकर भी कोई बहुत आश्वस्त नहीं था लेकिन

युवी का फ्रेडी को करारा जवाब

एंड्रयू फ्लिंटाफ के साथ हुई नोकझोंक ने युवराज सिंह को भड़का दिया, जिससे इस भारतीय बल्लेबाज ने ट्वेंटी-20 विश्व कप में इंग्लैंड के खिलाफ स्टुअर्ट ब्राड के एक ओवर में छह छक्के जड़ दिए। युवी की विस्फोटक पारी ने उनहें सर गारफील्ड सोबर्स, रवि शास्त्री और हर्शल गिब्स के साथ 'रिकार्ड बुक' में स्थान दिला दिया। युवराज ने कहा, 'यह एक सुखद अहसास है। मुख्य गेंदबाज के एक ओवर में छह छक्के जड़ना मुझे इस उपलब्धि को हासिल करने में मदद करने के लिए भगवान का शुक्रिया अदा करता हूं।' युवराज ने ब्राड के एक ओवर में लगातार छह छक्के लगाकर 16 गेंद में 58 रन की पारी खेली। युवराज जब बल्लेबाजी कर रहे थे, तो फ्लिंटाफ से उनकी बहस हुई थी और इस घटना के बाद युवी ने कोई दया नहीं दिखाते हुए विपक्षी टीम के गेंदबाजों को बल्ले से रौंद दिया। युवी ने कहा, निश्चित तौर पर इससे मुझे प्रेरणा मिली। यदि आपके खिलाफ कुछ शब्द कहे जाते हैं तो आप इसे बल्ले से वापस करना चाहते हैं और मैंने भी ऐसा किया।

लगता है कि खिलाड़ियों में यह बात थी कि उन्हें फाइनल में पहुंचना है और वे पहुंच भी गए। आखिर वह मुकाम भी आया जब विश्व चैंपियन बनने का मौका था।

महेंद्र सिंह धोनी की जांबाज सेना ने न्यू वांडरर्स मैदान पर छिड़ी क्रिकेटिया जंग में अपने चिर प्रतिद्वंद्वी को सोमवार को चारों खाने चित करके भारत को पहला ट्वेंटी-20 विश्व चैंपियन बना दिया। भारत की युवा शक्ति ने पाकिस्तानी जलजले को ठंडा करके पांच रन की रोमांचक जीत के साथ ही भारतीयों को दीवाली के डेढ़ महीने पहले ही पटाखों का त्योहार मनाने का अवसर दे दिया। कपिल देव की अगुआई में 25 जून 1983 को लॉर्ड्समें विश्व कप जीतने के बाद भारत की क्रिकेट के मैदान पर यह दूसरी सबसे बड़ी जीत है। इस जीत से भारत का विश्व कप में पाकिस्तान पर शत प्रतिशत जीत का रेकार्ड भी बरकरार किया।

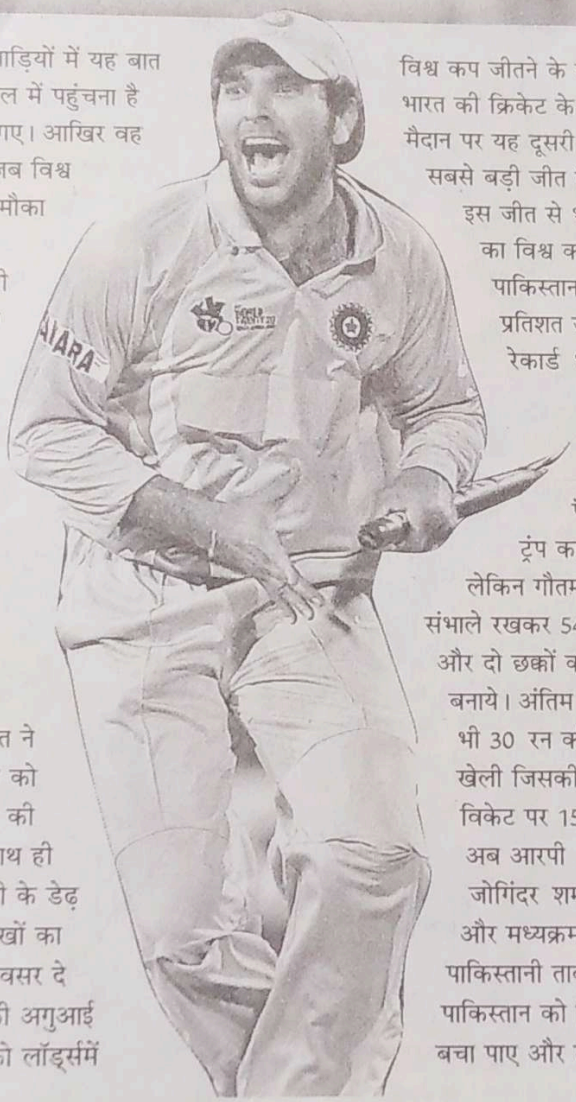

धोनी ने फिर से टास जीता और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। धोनी और ट्रंप कार्ड युवराज सिंह नहीं चले लेकिन गौतम गंभीर ने एक छोर संभाले रखकर 54 गेंदों पर आठ चौकों और दो छक्कों की मदद से 75 रन बनाये। अंतिम क्षणों में रोहित शर्मा ने भी 30 रन की जिम्मेदारी भरी पारी खेली जिसकी बदौलत भारत पांच विकेट पर 157 रन बनाने में सफल रहा। अब आरपी सिंह, इरफान पठान और जोगिंदर शर्मा की बारी थी, जिन्होंने शीर्ष और मध्यक्रम को तहस-नहस करके पाकिस्तानी ताबूत में आखिरी कील ठोकी। पाकिस्तान को मिस्बाह उल हक (44) भी नहीं बचा पाए और उनकी पूरी टीम 19.3 ओवर में

पारी की शुरुआत करने वाले गंभीर ने 18वें ओवर में आउट होने से पहले 54गेंद पर 75 रन बनाए, जिसमें आठ चौके और दो छक्के शामिल हैं। अंतिम क्षणों में रोहित शर्मा ने 16 गेंद पर दो छक्कों और एक चौके की मदद से 30 रन की तूफानी पारी खेली।

152 रन पर सिमट गई। पठान और आरपी ने तीन-तीन ,जबकि जोगिंदर ने दो विकेट लिए। पाकिस्तान को अंतिम ओवर में तीन विकेट चाहिए थे,जबकि भारत को एक विकेट। इस टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाले पर मिस्बाह पर पाकिस्तान का जिम्मा था, जबकि धोनी ने फिर से जोगिंदर पर भरोसा दिखाया। जोगिंदर ने सेमीफाइनल में आस्ट्रेलिया के खिलाफ भी दबाव में अंतिम ओवर में दो विकेट लेकर भारत को जीत दिलाई थी। उन्होंने पहली गेंद वाइड की। कप्तान धोनी समझाने आए कि दबाव में नहीं अपनी नेचुरल गेंदबाजी करो। अगली गेंद पर रन नहीं बना लेकिन मिस्बाह ने दूसरी गेंद सीमा रेखा पार छह रन के भेज दी। पाकिस्तानी झूमने लग गए और भारतीयों के दिल धक-धक करने लगे। धोनी फिर जोगिंदर को समझाने गए। उन्होंने अगली फुल लेंथ गेंद फेंकी, जिसे मिस्बाह ने फाइन लेग की तरफ खेलना चाहा लेकिन वह हवा में उछल कर एस श्रीसंत के हाथों में पहुंच गई।

स्टेडियम में भारतीय तिरंगा लहराने लगा और धोनी की सेना जीत की खुशी में झूमने लगी। भारत को चैंपियन बनने पर चार लाख 90 हजार डालर का पुरस्कार मिला। लेकिन भारत पाकिस्तान के प्रत्येक मैच की तरह यह मैच भी काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा, जिसमें दोनों टीमों पर एक दूसरे के खिलाफ और वह भी फाइनल में खेलने का दबाव साफ झलक रहा था। गंभीर और रोहित को छोड़कर भारत का कोई अन्य बल्लेबाज खुलकर नहीं खेल पाया, जबकि पाकिस्तान पर इतिहास के साथ-साथ अपेक्षाओं का अधिक बोझ दिखा।

इससे पहले, पारी की शुरुआत करने वाले गंभीर ने 18वें ओवर में आउट होने से पहले 54गेंद पर 75 रन बनाए, जिसमें आठ चौके और दो छक्के शामिल हैं। अंतिम क्षणों में रोहित शर्मा ने 16 गेंद पर दो छक्कों और एक चौके की मदद से 30 रन की तूफानी पारी खेली। हालांकि ट्रंप कार्ड युवराज सिंह और कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने निराश किया।

वर्ल्डकप ट्वंटी-20

24 साल बाद फिर से भारत बना विश्व विजेता लेकिन क्या किसी ने आज के 14 दिन पहले यह सोचा था कि भारतीय टीम यह करिश्मा कर पाएगी। लेकिन धोनी की ब्रिगेड ने वो कर दिखाया जो स्वप्न सरीखा था। जब भारतीय टीम 20-20 विश्व कप खेलने गई थी तो परिस्थितियां उसके अनुकूल नहीं थीं। पहले तो नेटवस्ट ट्राफी में उसे हार का सामना करना पड़ा। दूसरा सचिन, सौरव और द्रविड़ में से कोई भी नहीं था। पूरी की पूरी नई टीम के साथ क्या यह संभव था कि भारतीय टीम वहां अपना सौ प्रतिशत दे पाती मगर आज बात ही अलग है। हम विश्व विजेता हैं। हमने विश्व की सभी बड़ी टीमों पर जीत दर्ज की फिर चाहे वह दक्षिण अफ्रीका हो या आस्ट्रेलिया या फिर चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान हो, भारतीय टीम ने हर मोर्चे पर सौ प्रतिशत प्रदर्शन किया और क्रिकेट के नए रूप को जो कि क्रिकेट का युवा रूप है, पूरे विश्व को हतप्रभ करते हुए विश्व विजेता हुआ। हाल ही संपन्न विश्व कप में भारतीय टीम पहले राउंड में बाहर हो गई लगती थी। लेकिन इस जीत ने उन सभी बीती बातों को भुला दिया है। साथ ही यह भी जता दिया कि कोई जरूरी नहीं कि सारे खिलाड़ी बड़े नामों और बड़े रिकार्डधारी हों। ऐसा इसलिए भी है कि क्योंकि शायद हमने बिना सचिन के भारतीय टीम की कल्पना नहीं की है पर अब धोनी ब्रिगेड की यह जीत वाकई में काबिले तारीफ है। भारतीय टीम की जीत ने लाखों क्रिकेट प्रेमियों को खुशी प्रदान की है वह कभी भूलने वाली नहीं है। कांग्राचुलेशंस, धोनी एंड कंपनी। यूथ ब्रिगेड के विश्व विजेता बनने की खुशी में सभी भारतीयों की ओर भारतीय को बधाई। चक दे इंडिया।

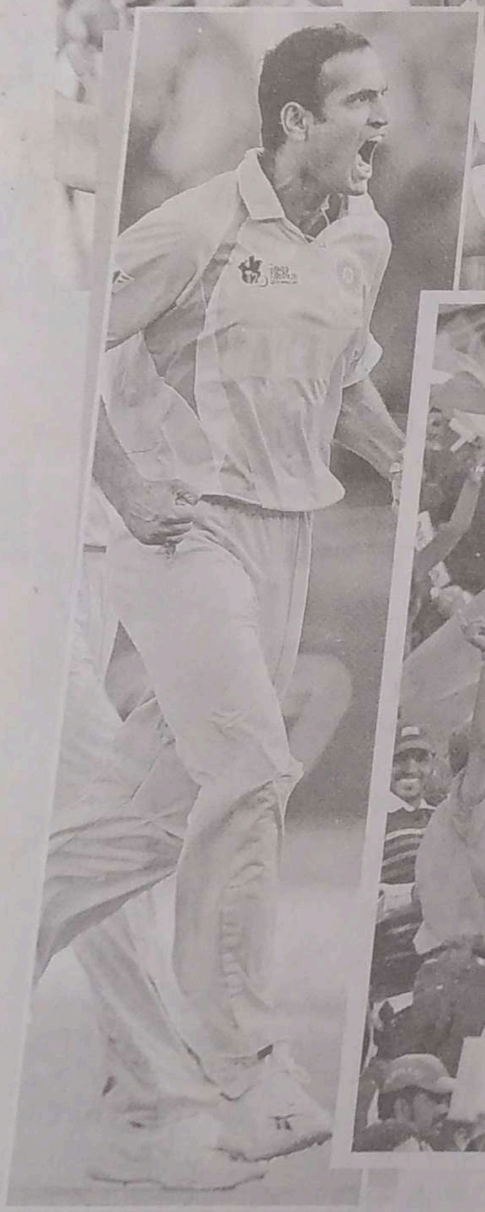

कलरव
KALRAV

सदस्यता फार्म

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	10 रुपये
वार्षिक	100 रुपये
पांच वर्ष के लिए	500 रुपये
आजीवन	5000 रुपये
विदेशों में वार्षिक	100 डालर

हम कलरव के वार्षिक/आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं। हम वार्षिक/आजीवन शुल्क ..... रुपये मनीआर्डर/डीडी/चेक से भेज रहे हैं।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें–

नाम .....

पता .....

..... पिन कोड .....

दूरभाष .....

ईमेल .....

इसे आप तक पहुंचाने का खर्च कलरव उठाएगा।
मनीआर्डर/डीडी/चेक कलरव के नाम से भेजें।

प्रसार व्यवस्थापक

जन्म दिन के बहाने

सदाबहार देवानंद

हिंदी सिनेमा जगत में अनेकानेक अभिनेताओं की भीड़ में देवानंद ऐसा नाम है जो हमेशा जवान माना जाता है। उनके जमाने के बहुत सारे अभिनेताओं का अब कहीं अता-पता नहीं चलता अथवा वे कभी-कभी ही खबरों में होते हैं लेकिन देवानंद के साथ ऐसा नहीं है। वे अभी भी न केवल काम कर रहे हैं हिंदी सिनेमा को और मजबूती प्रदान करने के काम में लगे हुए हैं। गुजरे जमाने में उन्हें सदाबहार कहा गया था, 84 साल के होने का बाद भी वह सदाबहार हैं।

जिंदगी की बेहिसाब यादों और अनुभवों का पिटारा लिए इस चिरयुवा नायक के करीने से सजे उभरे हुए बाल, झूलती हुई सी चाल और कातिलाना जलवे बालीवुड के इतिहास के सुनहरे पन्नों में सदा के लिए दर्ज हो चुकी है। देवदत्त पिशोरीमल आनंद की हस्ती कुछ ऐसी है कि वह बालीवुड में प्रवेश करने के बाद से लेकर आज तक कुछ-कुछ समय बाद चर्चाओं में आते रहे हैं। चाहे बात अभिनेत्री सुरैया के साथ उनकी दुखांत प्रेम कहानी की हो या जिंदगी के उतार-चढाव की, उन्होंने हर लमहे को पूरी मुहब्बत के साथ जिया है। यही कुछ बात ऐसी है कि वह इतने लोकप्रिय रहे हैं। देवानंद ने जिंदगी को कितनी खूबसूरती के साथ जिया है, इसका अंदाजा उनकी आत्मकथा के शीर्षक रोमांसिंग विथ लाइफ से ही पता चल जाता है। उनके समकालीन नायक न केवल उन्हें बतौर अभिनेता याद करते हैं बल्कि एक निर्माता के तौर पर भी आज तक उनकी काबिलियत का लोहा मानते हैं। बालीवुड के इतिहास में दर्ज कुछ कालजयी फिल्मों में से एक गाइड में देवानंद की नायिका रही वहीदा रहमान का मानना है कि उनका बहुत मन था कि मैं गाईड में काम करूं और उन्होंने मुझे बहुत अच्छे से पेश भी किया। मैंने उन्हें बताया कि केवल यही एक ऐसी फिल्म है जिसमें मेरे इतने नृत्य सीन थे और उनसे गुजारिश की कि इनमें से एक भी सीन न काटें। वे तुरंत इस बात के लिए राजी हो गए। जब मुझे पता चला कि वे मुझे अपनी पहली फिल्म सीआईडी में उनके साथ करना है तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। काला पानी, सीआईडी और हम दोनों में बेहतरीन और यादगार अदाकारी के नक्श छोड़ने वाले देवानंद 1949 में फिल्म निर्माण की ओर मुड़ गए और अपने भाइयों चेतन तथा विजय आनंद के साथ नवकेतन बैनर की स्थापना की। इस बैनर ने गाईड, हरे रामा हरे कृष्णा और ज्वेल थीफ जैसी ब्लाकबूस्टर फिल्में हिंदी सिनेमा को दी। हालांकि देवानंद का अपना सभी नायिकाओं के साथ अच्छा तालमेल रहा लेकिन सुरैया के साथ उनकी कनबतियों ने रोमांस की एक नई दास्तां को जन्म दिया जिसके अफसाने आज भी देवानंद का नाम आते ही फिजा में तैरने लगते हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या उस मासूम प्यार की कहानी इस किताब में भी दर्ज है, देवानंद ने तपाक से कहा, जी बिल्कुल इसमें उसका जिक्र है।

एड्स

बचाव में ही समझदारी

सहयोग की ओर से जनहित में जारी

कई प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर

आईयूसीएन की इस साल की रेडलिस्ट में कहा गया है कि प्रत्येक चार स्तनधारियों मे से एक, आठ पक्षियों में से एक, उभयचरों, जलचर और थलचरों की एक तिहाई और विश्व भर के पेड़-पौधों की 70 फीसदी प्रजातियां खतरे में पड़ गई हैं। रिपोर्ट में चिंता जताई गई है कि जीव जंतुओं और पेड़ पौधों के खत्म होने से पारिस्थितिक असंतुलन का खतरा पैदा हो रहा है। आईयूसीएन महानिदेशक जूलिया मार्टन लेफेवर का कहना है कि इस साल रेडलिस्ट से पता चला है कि कई प्रजातियों के संरक्षण के लिए अब तक उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं हैं।

दुनिया भर में बेजुबान जीव जंतुओं पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं। इंसान हस्तक्षेप व विपरीत परिस्थितियों के चलते 41 हजार से अधिक प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं। जीव जंतुओं की विलुप्त हो रही प्रजातियों को बचाने के काम में लगे अंतरराष्ट्रीय संरक्षण संघ आईयूसीएन की जारी की गई 2007 की रेडलिस्ट से खुलासा हुआ है कि पशु पक्षियों और पौधों के लिए धरती पर बड़ा संकट पैदा होता जा रहा है। 41415 प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गई हैं। आईयूसीएन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि जैवविविधता की दर में निरंतर हो रही कमी और इंसानी हस्तक्षेप के चलते विलुप्त हो रही प्रजातियों की तादाद हर साल बढ़ रही है। यदि कई देशों की सरकारों ने उचित कदम नहीं उठाए तो स्थिति काफी भयावह हो सकती है। 2006 तक खतरे की जद में आने वाली प्रजातियों की तादाद 16118 थी। लेकिन इस साल यह काफी तेजी से बढ़कर 41415 के आंकड़े को छू गई। आईयूसीएन की इस साल की रेडलिस्ट में कहा गया है कि प्रत्येक चार स्तनधारियों में से एक, आठ पक्षियों में से एक, उभयचरों, जलचर और थलचरों की एक तिहाई और विश्व भर के पेड़-पौधों की 70 फीसदी प्रजातियां खतरे में पड़ गई हैं। रिपोर्ट में चिंता जताई गई है कि जीव जंतुओं और पेड़ पौधों के खत्म होने से पारिस्थितिक असंतुलन का खतरा पैदा हो रहा है। आईयूसीएन महानिदेशक जूलिया मार्टन लेफेवर का कहना है कि इस साल रेडलिस्ट से पता चला है कि कई प्रजातियों के संरक्षण के लिए अब तक उठाए गए कदम पर्याप्त नहीं हैं। जैवविविधता के ह्रास की दर निरंतर बढ़ रही है और इसे रोकने की तुरंत जरूरत है ताकि पशु पक्षियों व पेड़ पौधों की विलुप्त प्रजातियों को संरक्षित किया जा सके। लेफेवर का कहना है कि यह काम किया जा सकता है लेकिन तभी जब समाज का हर स्तर इसके लिए प्रेरित हो।

इतना ही नहीं, यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किली मंजारो राष्ट्रीय उद्यान, ग्रेट वैरियर रीफ और टिंबक टू जैसे कई प्राकृतिक और सांस्कृतिक स्थल जलवायु परिवर्तन की वजह से खतरे में हैं। यूनेस्को की ओर से कराए गए केस

स्टडीज आन क्लाइमेट चेंज ऐंड वर्ल्ड हेरिटेज अध्ययन से यह बात सामने आई है। यूनेस्को के महानिदेशक कोचीरो मतसूरा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन मानवीय व प्राकृतिक प्रणालियों सहित सांस्कृतिक व प्राकृतिक विश्व धरोहर संपत्तियों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन से इन धरोहरों की सुरक्षा और सतत प्रबंधन संबंधिक देशों की सरकार की प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर पहुंच गया है। अध्ययन को प्रकाशित किए जाने का मकसद धरोहरों की सुरक्षा के लिए लोगों का जागरूक होना है। अध्ययन पांच अध्याय में विभाजित है। इसमें ग्लेशियर समुद्री और स्थलीय जैवविविधता पुरातत्व स्मारक और ऐतिहासिक शहरों व बस्तियों को शामिल किया गया है। अध्ययन में कहा गया है कि ग्लेशियरों को पिघलने से अपनी खूबसूरती के लिए मशहूर स्थल प्रभावित हो रहे हैं। इससे सागर माथा नेशनल पार्क में पाए जाने वाले बर्फीले चीते जैसे लुप्तप्राय जीवों के रहने का स्थल प्रभावित हो रहा है। इन ग्लेशियरों के पिघलने से कई स्थानों पर बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। इससे तटीय क्षेत्रों में बसी मानव बस्तियों के लिए भी खतरा बढ़ गया है। इस प्रकार की आपदाओं से निपटने के लिए अध्ययन में निगरानी और पूर्व चेतावनी प्रणाली और हिमानी झीलों से जलनिकासी के लिए कृत्रिम जल निकास प्रणाली बनाए जाने की सिफारिश की गई है। रिपोर्ट में समुद्री विश्व धरोहर स्थल पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव की भी समीक्षा की गई है। बढ़ते तापमान और अमलीकरण से गहरे समुद्र में स्थित मूंगा चट्टानों के प्रभावित होने का अंदेशा है। अध्ययन के मुताबिक आस्ट्रेलिया का ग्रेट बैरियर रीफ ब्लीच का शिकार हो रहा है। इससे मूंगा सफेद हो जाता है और समुद्री तापमान बढ़ने से मृत हो सकता है। इतना ही नहीं, स्थल पर स्थित जैव विविधता वाले क्षेत्र भी जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रहे हैं।

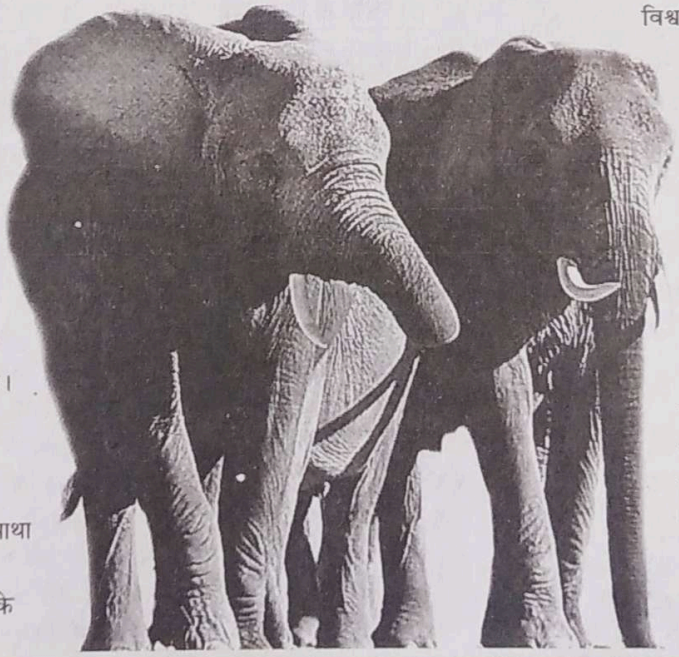

ग्लोबल वार्मिंग के प्रति हों सचेत

देश और दुनिया एक के बाद बड़ी समस्याओं से गुजर रहा है। इसे दुखद ही कहा जाएगा कि इनमें से कई के पीछे हम सब लोग भी काफी जिम्मेदार हैं। ग्लोबल वार्मिंग का खतरा भी इनमें से एक है। विकास बहुत जरूरी है लेकिन यह मानवता की कीमत नहीं किया जाना चाहिए। अगर इस तरह की भविष्यवाणियां की जा रही हैं कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा, तो क्या यह नहीं बताता कि पानी की समस्या क्यों इतनी जटिल होती जा रही है। भूकंप आदि का खतरा बढ़ता जा रहा है। पानी, भूकंप और इस तरह की तरह की अनेकानेक समस्याओं के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है। इस पर सोचना होगा। हम सभी को इस बारे में जागरूक होना पड़ेगा ताकि आसन्न खतरों से निपटा जा सके। आइये ग्लोबल वार्मिंग के खतरों से निपटने के लिए एकजुट होया जाए ताकि मानवता की रक्षा की जा सके। हम और आप सब का थोड़ा-थोड़ा सहयोग इस दिशा में काफी महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। आइये संकल्प लें कि हम जो कुछ भी कर सकते हैं उसमें कोई कोताही नहीं बरतेंगे।

कलरव की ओर से जनहित में प्रकाशित

चिंता महिलाओं के स्वास्थ्य की

महिलाएं चाहे किसी भी देश की हों अथवा किसी भी कोने में रहती हों, उनकी समस्याएं कमोबेश एक जैसी ही हैं। उनके स्वास्थ्य का सवाल भी हर देश में उसी तरह का है जैसा भारतीय महिलाओं का। अगर संक्षेप में कहा जाए तो किसी का ध्यान उनके स्वास्थ्य के प्रति उस तरह नहीं रहता जिस तरह होना चाहिए। खुद महिलाएं भी इसको लेकर सतर्क नहीं रहा करतीं। अब आधुनिकता के चलते हालांकि इस स्थिति में थोड़ा सुधार अवश्य हुआ है लेकिन उसे नाकाफी ही कहा जाएगा। इस दिशा में जो कुछ सकारात्मक दिख रहा है उसमें ज्यादा हिस्सा फिगर को लेकर जागरूकता बढ़ी है सेहत को लेकर यह कम ही दिखाई देती है।

जो महिलाएं बीस वर्ष की उम्र तक पहुंचने से पहले ही अपनी पहली संतान को जन्म देती है उन्हें मध्य आयु में खतरनाक बीमारियां होने की आशंका बहुत ज्यादा होती है। बीमारियों के कारण इन महिलाओं की मृत्यु भी हो सकती है। जर्नल आफ हेल्थ ऐंड सोशल बिहैवियर के सितंबर अंक में प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि पहले बच्चे के जन्म के समय जो महिलाएं अकेली या अविवाहित होती हैं उनकी समय से पहले मृत्यु होने की आशंका अधिक होती है। अध्ययन कम उम्र में अकेली या अविवाहित महिला के मां बनने के बाद उसकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति से संबंधित है। अध्ययनकर्ता जान हेनरेत्ता ने कहा कि पहले बच्चे के जन्म के दौरान अविवाहित रहने वाली महिलाएं अक्सर निम्न मध्यम आय वाले परिवारों से होती हैं। ऐसी महिलाओं के मध्य आयु में विवाह करने की संभावना भी कम होती है। फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के जान हेनरेत्ता के अध्ययन के निष्कर्षों में कहा है कि पहले बच्चे के जन्म के दौरान अविवाहित रहने वाली महिलाओं को मध्य आयु में क्या समस्याएं आएंगी, इसका संकेत इस अध्ययन से मिलता है।

हेनरेत्ता ने अपने अध्ययन के लिए 1931 से 1941 के दौरान जन्मी चार 4335 महिलाओं के बारे में हेल्थ ऐंड रिटायरमेंट स्टडी में दिए गए आंकड़ों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। इन महिलाओं से 1992 में पहली बार बात की गई। तब इनकी उम्र 51 से 61 साल के बीच थी। फिर 2002 में उनका साक्षात्कार लिया गया। अब उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, संपत्ति, बच्चों आदि के बारे में पूछा गया। आंकड़ों से पता चला कि बीस साल से कम उम्र में पहली संतान को जन्म देने वाली महिलाओं को मध्य आयु तक पहुंचते-पहुंचते मौत का खतरा 1.42 गुना अधिक था। ऐसी महिलाओं को दिल का दौरा पड़ने, फेफड़ों की बीमारी या कैंसर होने की आशंका भी अधिक थी।

तपेदिक में एंटीबायोटिक कारगर

अनुसंधानकर्ताओं ने एक ऐसी एंटीबायोटिक दवा तैयार की है जिससे अत्यंत संक्रमणकारी और खतरनाक अवस्था में पहुंच चुके तपेदिक के इलाज में छह माह के बजाय मात्र चार माह का समय लगता है। ब्राजील और अमेरिका के तपेदिक विशेषज्ञों के एक दल ने अमेरिकन सोसायटी मायक्रोबायोलाजी में आयोजित एक बैठक में अपने अनुसंधान की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मौक्सीफ्लोक्सेसिन नामक दवा ने अगर एंटीबायोटिक दवाओं की मात्रा तय मानक से सत्रह फीसदी अधिक मिलाई जाए तो तैयार होने वाला मिश्रण चार माह में ही तपेदिक के मरीजों का इलाज कर सकता है।

अनुसंधानकर्ताओं का कहना है कि उन्हें उस दवा की मदद से फेफड़ों के तपेदिक वाले मरीजों का करने में 68 से 85 फीसदी सफलता मिली है। विशेषज्ञों ने 74वीं इंटर साइंस कांफ्रेंस आन एंटीमाइक्रोवियल एजेंट्स ऐंड कीमोथिरेपी की बैठक में बताया कि दवा का यह मिश्रण तपेदिक के इलाज की अवधि को दो माह कम कर देता है। पूरी दुनिया में हर साल करीब 15 लाख लोग तपेदिक के कारण मौत का शिकार होते हैं। मरने वालों में बड़ी संख्या विकासशील देशों में मरीजों की होती है। आम तौर पर तपेदिक के इलाज के लिए परंपरागत एथेंबुटोल का इस्तेमाल किया जाता है लेकिन नई दवा के मिश्रण में एथेंबुटोल के स्थान पर माक्सीफ्लोक्सेसिन का उपयोग किया गया है। इस नहीं दवा की खोज करने वाले अनुसंधानकर्ताओं में से एक प्रोफेसर रिचर्ड चाइसन ने बताया कि करीब 25 साल की अवधि में यह एक महत्वपूर्ण प्रमाण मिला है कि एंटीबायोटिक दवा का मिश्रण वर्तमान में तपेदिक के इलाज के लिए इस्तेमाल की जा रही दवाओं की तुलना में ज्यादा कारगर होता है। चाइसन द जांस होपकिंस यूनिवर्सिटी आफ मेडिसिन में अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं महामारी विभाग में प्राध्यापक हैं। उन्होंने कहा कि एंटीबायोटिक दवा से मरीजों के शीघ्र इलाज के कारण इस बीमारी के दूसरे व्यक्तियों में संक्रमण की आशंका भी कम सो जाती है।

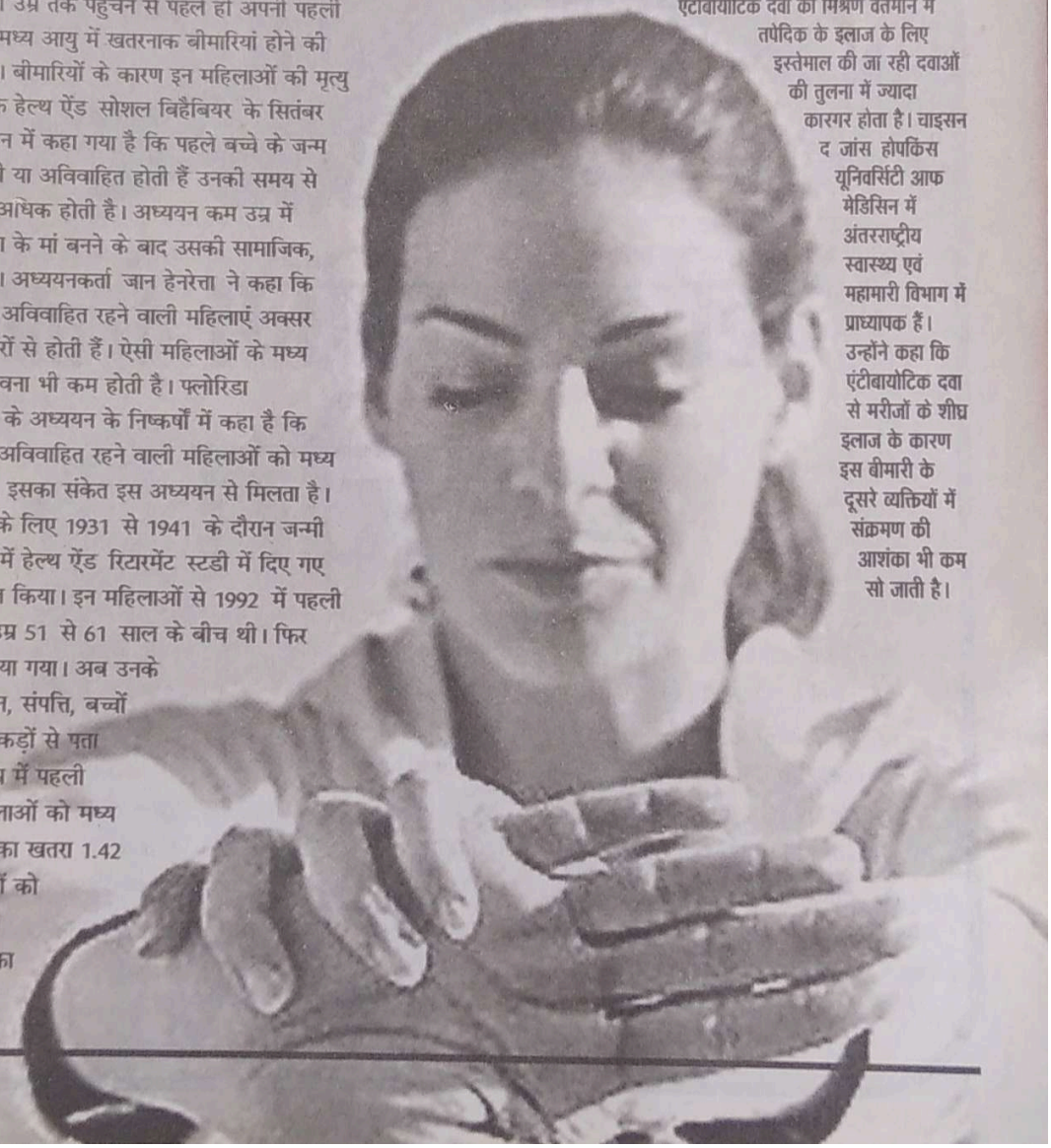

खूबसूरत महाबलेश्वर

महाबलेश्वर जाने का असली मजा अपना वाहन लेकर जाने में है क्योंकि वहां स्थित तीस दर्शनीय स्थल देने के लिए बस काम नहीं आती। जिप्सी, मारुति, सियरा व जीप या मोटरसाइकिल पर जाने की बात कुछ और ही है। यह वेन्ना झील के आसपास दस वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है।

समुद्र तल से तेरह सौ बहत्तर मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह महाराष्ट्र का सबसे अधिक ऊंचाई वाला लोकप्रिय व खूबसूरत पर्यतीय स्थल है। यह ब्रिटिश काल में बांबे प्रेसीडेंसी की ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। महाबलेश्वर की हरियाली से लबालब मनोरम दृश्यावलियां पर्यटक को स्वपन्न लोग में विचरण करने को विवश कर देती हैं।

यह कृष्णा नदी का उद्गम स्थल है जो सह्य पर्वत से निकलती है। महाराष्ट्र व आंध्र प्रदेश से होते हुए बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह चार सौ मील लंबी नदी है। पश्चिमी घाट में महाबलेश्वर का अपना अलग सम्मोहन है। हरे-भरे मोड़ों वाली घुमावदार सड़कों पर से आप जैसे-जैसे महाबलेश्वर की ओर बढ़ेंगे, वैसे-वैसे हवा की ताजगी व ठंडक महसूस कर आप अपनी शहरी थकान व चिंताओं को भूल जाएंगे। महाबलेश्वर जाने का असली मजा अपना वाहन लेकर जाने में है क्योंकि वहां स्थित तीस दर्शनीय स्थल देने के लिए बस काम नहीं आती। जिप्सी, मारुति, सियरा व जीप या मोटरसाइकिल पर जाने की बात कुछ और ही है। यह वेन्ना झील के आसपास दस वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। महाबलेश्वर मुंबई से दौ सौ सैंतालीस पुणे से एक सौ बीस किलोमीटर औरंगाबाद से तीन सौ अड़तालीस किलोमीटर और पणजी से चार सौ तीस किलोमीटर दूर है। महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम यहां के लिए मुंबई व पुणे से विशेष लग्जरी बसें चलाता है। यहां खाने-पीने और ठहरने की सामान्य सुविधा उपलब्ध है। 1828 में बांबे प्रेसीडेंसी के गवर्नर सर जान मिलकम द्वारा खोजे गए महाबलेश्वर देखने योग्य लगभग तीस प्वाइंट हैं। एलाफिस्टन प्वाइंट, माजोरी प्वाइंट, सावित्र प्वाइंट, आर्थर प्वाइंट, विल्सन प्वाइंट, हेलेन प्वाइंट, नाथ कोंट, लाकविग, बांबे पार्लर, कर्निक प्वाइंट और फाकलैंड प्वाइंट वादियों का नजारा देखने के लिए आदर्श जगहें हैं। महाबलेश्वर के दर्शनीय स्थानों में लिंगमाला वाटर फाल, वेन्ना लेक, पुराना महाबलेश्वर मंदिर प्रमुख हैं। भिलर टेबल लैंड, मेहर बाबा गुफाएं, कमलगर किला और हेरिसन फोलिक भी दर्शनीय हैं।

राजमची किला

लोनावाला रेलवे स्टेशन से यह सात किलोमीटर दूर है। जहां छत्रपति शिवाजी द्वारा बनवाया गया एक विशालकाय दुर्ग है। लोग इसे शाही छत भी कहते हैं।

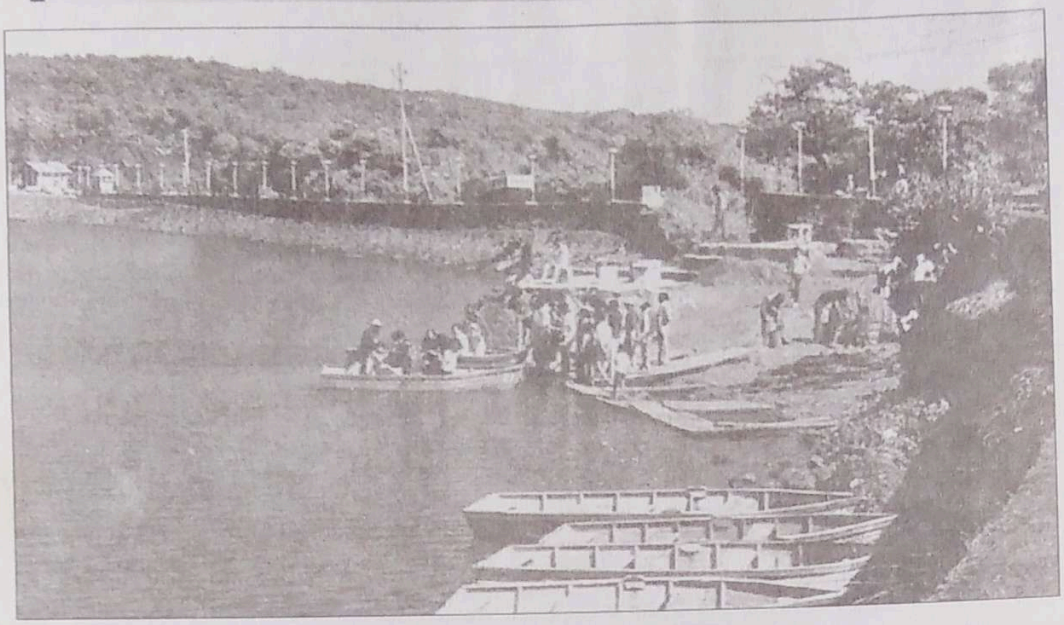

लोनावाला झील

यह नगर से 15 किलोमीटर दूर आकर्षक पिकनिक स्थल है। यहां झील चारों ओर से प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर है। यह सैलानियों को बेहद आकर्षित करती है।

प्रतापगढ़-यह महाबलेश्वर से चौबीस किलोमीटर दूर नौ सौ मीटर की ऊंचाई पर है। यह उन किलों में से एक है जिसका निर्माण छत्रपति शिवाजी ने सन 1656 में अपने निवास स्थान के लिए किया था। यहां मराठा साम्राज्य ने एक निर्णायक मोड़ लिया जब शिवाजी ने एक ताकतवर योद्धा अफजल खान को नाटकीय तरीके से मार डाला।

पंचगनी-कृष्णा घाटी में दक्षिण में स्थित पंचगनी महाबलेश्वर से मात्र 19 किलोमीटर दूर है। यह चारों ओर से रमणीक दृश्यों से भरपूर होने के कारण सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहां टेबल टाप या टेबल लैंड है। जहां अनगिनत फिल्मों के प्रेम गीतों की शूटिंग होती रहती है। यहां पर्वत श्रृंखला को देखना और तेज हवाओं से बात करना एक अनूठा अनुभव है। सहयात्री पर्वत की पश्चिमी श्रेणी में स्थित लोनावाला और खंडाला दो रम्य पहाड़ियां हैं। मुंबई पुणे हाईवे पर ये पहाड़ियां मुंबई से 118 किलोमीटर और पुणे से 67 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। इन दोनों के बीच मात्र पांच किलोमीटर का फांसला है। समुद्र तल से 625 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इन स्थलों की खोज 1871 में मुंबई प्रेसीडेंसी के गवर्नर सर एलफिस्टन ने की थी। यहां के नैसर्गिक सौंदर्य, स्वास्थ्य वर्धक जलवायु के आकर्षण में उन्होंने इसका पर्यटन स्थल के रूप में विकास कर दिया। यहां पहुंचने के लिए मुंबई से ट्रेन, टैक्सियों व बसों की अच्छी व्यवस्था है। ट्रेन से तीन घंटे में लोनावाला पहुंच सकते हैं। मुंबई से हर आधे घंटे बाद बसें मिलती हैं। दिन भर सैर सपाटा करके पर्यटक रात में मुंबई लौट सकते हैं। वर्षा काल में यहां का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है। उन दिनों घने बादल पहाड़ियों को ढक लेते हैं। घूमते हुए ऐसा लगता है जैसे बादलों के बीच पहुंच गए हैं। पहाड़ियां हरी-भरी हो जाती हैं। जगह-जगह झरने फूट पड़ते हैं। नौसर्गिक सुंदरता के साथ ही यहां समीप ही ऐतिहासिक और पुरातत्व महत्व की कारला, भाजा और बेड़सा गुफाएं भी हैं। लोनावाला और खंडाला में देखने योग्य एक से बढ़कर एक सौंदर्य स्थल हैं। जिन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो प्रकृति ने अपनी हरी-भरी ओढ़नी सारे क्षेत्र में फैला दी है।

तुंगरली झील : यह नगर जल का प्रमुख स्रोत है। रेलवे स्टेशन से तीन किलोमीटर दूर स्थित इस झील के रमणीय दृष्य पर्यटकों को बरबस मोह लेते हैं। झील के पास ही योग प्रशिक्षण केंद्र है। एक अस्पताल भी है जिसमें रोगियों का इलाज योग के द्वारा किया जाता है।

मुमुज चिड़ियाघर : यह राजमची से एक किलोमीटर दूर है। इसमें अनेक प्रकार के पशु पक्षी हैं। यह अपरान्ह चार बजे से छह बजे तक खुला रहता है।

बलवन बांध : इस स्थान के समीप एक बेहद खूबसूरत उद्यान है। शाम के समय यहां सैर करने का अपना अलग ही आनंद है। यह लोना वाला से डेढ़ किलोमीटर दूर है।

कारला गुफाएं : ईसा पूर्व डेढ़ सौ वर्ष पूर्व इन गुफाओं से निर्मित भित्ति चित्र और मूर्तियां शिल्प कला के बेजोड़ नमूने हैं जो देखते बनते हैं। ये लोनावाला से लगभग बारह किलोमीटर दूर तथा मुख्य सड़क से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। ये गुफाएं बाहरी व भीतरी दोनों ओर से पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। गुफाओं के द्वार पर स्थित खंभों पर शेरों की आकृतियां खुदी हुई हैं। खंभों वाली चौखट पर उकेरी गई मिथुन जोड़ों की तस्वीरें भी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

लोहागढ़ किला : यह किला एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। ऊपर से नीचे बसी बस्तियों का विहंगम दृश्य दिखाई देता है जो बड़ा लुभावना लगता है।

वेलिंगटन के ड्यूक की नाक : इस पहाड़ी के शिखर पर एक चट्टान नाक के आकार में उभरी हुई है जो इंग्लैंड के राजकुमार की नाक से मेल खाती थी। तभी से इस पहाड़ी का यह नाम मशहूर हो गया। यह खंडाला की सबसे प्रसिद्ध पहाड़ी है।

भाजा की गुफाएं : मुख्य सड़क से तीन किलोमीटर दूर भाजा की 18 गुफाएं लगभग दो सौ ईसापूर्व की हैं। इसके दक्षिण में 14 स्तूपों का एक अनोखा समूह है जिसमें पांच स्तूप अंदर की ओर तथा नौ बाहर की ओर हैं।

बेडसा की गुफाएं : ये कामसेतु स्टेशन से छह किलोमीटर दक्षिण पूर्व में हैं जिन्हें देखा जा सकता है।

अमीर का न्याय

■ खलील जिब्रान

अमीर न्याय आसन पर पैर-पर-पैर रखे बैठा था। उसके दोनों ओर राज्य के विचारक बैठे थे, जिनके झुर्रीदार चेहरों पर धर्म-ग्रंथों और शास्त्रों के पृष्ठ अंकित थे। उनके निकट ही तलवार पकड़े और बर्छियां उठाए सैनिक खड़े थे। सम्मुख जनता थी। कुछ व्यक्ति तमाशा देखने आए थे। और कुछ अपने आत्मीयों का भाग्य-निर्णय सुनने। वे सब दुख भरी सांसें छोड़ते और नेत्रों से दीनता टपकाते हुए सर झुकाए हुए खड़े थे, मानो अमीर से दृष्टि मिलते ही उनके हृदय भय और आतंक से थर्रा उठेंगे।

परिषद के बैठ जाने के पश्चात जब न्याय का समय निकट आया, अमीर ने हाथ उठाकर चीखती जैसी आवाज में कहा-अपराधियों को एक-एक करके पेश करो और उनके कुकृत्यों और अपराधों से मुझे अवगत कराओ।

कारागार का द्वार खोल दिया गया। उसकी काली दीवारें जबड़ा फाड़कर जमुहाई लेते हुए जंगली जानवर के खुले मुंह के समान चमक उठीं। हर कोने से हथकड़ियों और बेड़ियों की झनझनाहट के साथ बंदियों की आहों और कराहों की आवाजें आने लगीं। कुछ क्षण बाद दो सैनिक एक युवक को लिए हुए कारागार से बाहर निकले। उसके हाथ कांटेदार हथकड़ी से जकड़े थे। उसकी कठोर और गंभीर आकृति उसकी सशक्त आत्मा और वीर हृदय की परिचायक थी। उन्होंने उसे परिषद के सम्मुख खड़ा कर दिया। अमीर ने उसे एक मिनट तक घूरा और बोला- इस आदमी का अपराध क्या है? यह मेरे सामने सर उठाए ऐसे खड़ा है, जैसे कानून की गिरफ्त में न होकर यह किसी सम्मान के स्थान पर खड़ा हो।

एक सदस्य ने उत्तर दिया- श्रीमान, यह कातिल है। इसने कल हुजूर के एक दरबारी पर आक्रमण किया और उसकी हत्या कर दी। वह दौरे पर सरकारी काम से गांव जा रहा था। गिरफ्तारी के समय भी इसके हाथ में खून से सनी तलवार थी।

अमीर क्रोध से अपने आसन पर उचका। उसकी आंखें जल उठीं। वह ऊंची, कर्कश आवाज में दहाड़ा- वापस ले जाओ इसे वहीं अंधेरे में। इसके शरीर को जंजीरों से ढंक दो। कल सूरज निकलने से पहले ही इसी की तलवार से इसका सिर काट देना और लाश को जंगल में फेंक देना ताकि गिद्ध और जंगली जानवर इसका सफाया कर दें और हवा लाश की सड़ांध को इसके संबंधियों के नथुनों तक पहुंचा दे।

युवक कारागार में वापस ले जाया गया। जन-समूह की करुणार्द्र दृष्टि और गहरी आहें उसके पीछे-पीछे गईं, क्योंकि वह युवक था, अपने जीवन के वसंत में था और था सुंदर व मजबूत काठी का।

सैनिक दूसरी बार उपस्थित हुए। इस बार वे कारागार से एक दुबली पर अत्यंत सुंदर लड़की को लाए। उसका चेहरा व्यथा और वेदना के कफन से ढंका था। आंखें आंसुओं से तर थीं और सिर खेद और पश्चाताप से झुका था। अमीर ने उसकी ओर देखकर पूंछा- इस बीमार लड़की ने क्या किया था? वह मेरे सामने ऐसे खड़ी है, जैसे सत्य की बगल में छाया खड़ी होती है।

एक सैनिक ने उत्तर दिया- श्रीमान, यह बदचलन है। इसका पति एक रात को जब घर वापस आया, तो उसने इसको इसके प्रेमी की बाहों में पाया। उसने इसी कारण इसको पुलिस में दे दिया। इसका प्रेमी फरार है। अमीर उसकी ओर इस बुरी तरह से घूरने लगा कि वह लजा कर पृथ्वी की ओर देखने लगी। एकाएक वह मोटी आवाज में बोला, इसे भी उसी अंधेरे में वापस ले जाओ और कांटों की सेज पर सुला दो ताकि इसे उस सेज की याद आए जो इसने अपनी निर्लज्जता से नापाक कर दी है। इसे मिर्च मिली शराब पिलाना ताकि फिर से यह उस चुंबन का स्वाद चख सके जो वर्जित था। सुबह होते ही इसे नंगी हालत में घसीटकर शहर के बाहर ले जाना और पत्थरों से मारना और इसकी लाश को वहीं छोड़ देना ताकि भेड़िये इसके गोश्त का स्वाद लें और कीड़े-मकोड़े इसकी हड्डियां कुतरें।

लड़की बंदी गृह के उसी अंधकार में ठूस दी गई। जन समूह ने अमीर के निर्णय से कांप कर और युवती की अभागी सुंदरता से दुखी होकर उसे चिंतापूर्ण दृष्टि से जाते हुए देखा।

तीसरी बार सैनिक एक अधेड़ और कमजोर पुरुष को लेकर उपस्थित हुए जो अपनी कांपती टांगों को इस प्रकार घसीट रहा था जैसे वे टांगें न होकर उसके फटे-पुराने वस्त्रों से लटके हुए चीथड़े हों। वह भय से इधर-उधर देख रहा था और उसकी सहमी हुई दृष्टि में निराशा, पीड़ा और अभाव की छायाएं झांक रही थीं। अमीर ने उसकी ओर घूरकर तेज आवाज में पूछा, इस बेवकूफ जानवर ने कौन सा अपराध किया है जो जिंदों के बीच मुर्दों सा आकर खड़ा हो गया है।

एक सैनिक ने उत्तर दिया, श्रीमान यह चोर है। एक रात यह मठ में घुसा था। वहां इसे महंतों ने पकड़ लिया। तलाशी लेने पर इसके वस्त्र की तहों से देव स्थान का एक पवित्र स्वर्ण पात्र निकला था।

अमीर ने उसको इस दृष्टि से देखा जैसे एक भूखा गिद्ध एक घायल गौरैया को देखता है और चिग्घाड़ा, इसे भी उसी अंधेर में फेंक दो और जंजीरों से जकड़ दो। सुबह होते ही इसे बाहर ले जाकर एक ऊंचे पेड़ से रस्सी के सहारे लटका देना और लाश को आसमान और जमीन के बीच झूलने देना उस वक्त तक जब तक कि इसकी चोरी करने वाली उंगलियां पत्तों की तरह झड़ कर गिर न जाएं और हवा इसके अंगों को धूल की तरह बिखेर न दे। और तब वह चोर भी उस कारागार में वापस ले जाया गया। इस बार दर्शकों ने बड़बड़ाकर एक दूसरे से कहा, न जाने कैसे इस कमजोर आदमी को मठ का पवित्र स्वर्ण पात्र चुराने का साहस हुआ? अमीर न्यायासन से नीचे उतर आया। विचारक और विधायकों ने अनुसरण किया। सैनिक आगे और पीछे चलने लगे। जनसमूह बिखर गया। शीघ्र ही वह स्थान खाली हो गया। बंदियों की दर्दनाक आहों-कराहों और सुबकियों के सिवा जो दीवारों पर काली छाया की तरह घूमने लगी थीं, वहां कोई आवाज शेष न रही।

इस समूची कार्रवाई के समय मैं वहां उपस्थित था। मैं उन जंगम छायाओं के सम्मुख

29/36

एक दर्पण की भांति खड़ा था और विचार कर रहा था उस कानून को जो मनुष्य ने अपने साथियों के लिए बनाया है। मनन कर रहा था जनता पर किए जाने वाले उस तथाकथित न्याय पर और डूब-उतरा रहा था। तब जीवन के रहस्य और अस्तित्व को लेकर। मैं इस मन:स्थिति में जब तक रहा, जब तक मेरे विचार सांध्य कालीन आकाश में कोहरे से ढके प्रकाश की भांति स्पष्ट और धुंधले नहीं हो गए। उस स्थान को त्यागते हुए मैं स्वयं से बोला, पौधे पृथ्वी से जीवन तत्व ग्रहण करते हैं। भेड़ें उन पौधों को चरती हैं और भेड़िये उन भेड़ों का शिकार करते हैं। भालू भेड़ियों का संहार करते हैं और सिंह भालुओं का। मृत्यु अपनी बारी पर सिंह को समाप्त कर देती है। मृत्यु से भी ज्यादा शक्तिशाली क्या कोई व्यक्ति है जो अपराधों की श्रृंखला को स्थायी रूप से मिटा दे? ऐसी कोई शक्ति है जो इन घृण्य बुराइयों को अच्छाइयों में परिवर्तित कर दे? ऐसी कोई शक्ति है जो जीवन के समस्त तत्वों को संग्रहीत कर उन्हें हंसते हुए आत्मसात कर ले। वैसे ही जैसा समुद्र धाराओं को अपनी तली में संग्रहीत कर लेता है। ऐसी कोई शक्ति है जो हत्या किए जाने वाले हत्यारे को दुष्चरित्र को और प्रेमी को एवं साहूकार और चोर को उस न्यायालय में उपस्थित करे जो अमीर के न्यायालय से महान हो?

दूसरे दिन मैं खेतों के बीच से होता हुआ नगर के बाहर आया। घाटी के छोर पर पहुंचने पर मैंने गिद्ध और चीलों के झुंड को आकाश से पृथ्वी की ओर झपटते देखा। उनकी चीख और चीत्कार और पंखों की फड़फड़ाहट से वहां का वातावरण कांप रहा था। कारण की खोज में मैं आगे बढ़ा। मैंने देखा कि एक मनुष्य का शव एक ऊंचे वृक्ष से लटक रहा है। एक स्त्री का नग्न चुटैला शव पत्थरों के बीच पड़ा है और एक युवक का शीश रहित शरीर रक्तरंजित पृथ्वी पर सोया हुआ है। दृश्य की विभत्सता से मेरे रोंगटे खड़े हो गए और नेत्रों के सम्मुख अंधकार का एक मोटा आवरण खिंच आया। मैंने देखने का प्रयत्न किया पर कुछ न देख सका। सिवा मृत्यु की उन डरावनी आकृतियों के जो रक्तरंजित शवों के ऊपर नाच रही थीं। मैंने सुनने का प्रयत्न किया पर कुछ सुन नहीं सका। सिवा नाश के उस क्रंदन के जो अमीरी कानून के सीत्कारों के आसपास मंडराने और चक्कर काटने वाले कौवों की कांव कांव में खोजा जा रहा था।

तीन मानव कल वे जीवन का आलिंगन कर रहे थे और आज मृत्यु की गोद में हैं। तीन प्राणियों ने अमीरों के कानून की दृष्टि में अपराध किया और कानून ने अपनी अंधता में हाथ फैलाकर उनको मिटा दिया। तीन प्राणी दंभ द्वारा पापी ठहरा दिए गए क्योंकि वे निर्बल थे उन्हें कानून ने मिटा दिया क्योंकि वह सशक्त था।

जब एक व्यक्ति इंसान को मिटा देता है, समाज कहता है यह हत्यारा है। पर जब वह एक अधिकार संपन्न व्यक्ति द्वारा मिटा दिया जाता है तब कहा जाता है यह न्यायवान है। जब एक व्यक्ति मठ की चोरी करता है, उसे चोर कहकर पुकारा जाता है पर जब एक अमीर जीवन की चोरी करता है तब उसे एक गुणवान शासक बताया जाता है। जब एक स्त्री अपने पति के प्रति विश्वासघात करती है जनता उसे दुष्चरित्र की संज्ञा देती है किंतु जब अमीर उसे नग्नावस्था में बाहर खदेड़वाता है और पत्थरों द्वारा मारे जाने का आदेश देता है तब वे उसे महान अमीर कहकर पुकारते हैं।

रक्तपात वर्जित है, शासक को तब उसकी अनुमति क्यों दी गई? संपत्ति का अपहरण अपराध है, प्राणों के अपहरण को तब उचित क्यों कहा गया? नारी की कृतघ्नता अशोभनीय है पर क्या नग्न शरीर पर पत्थरों से प्रहार करना शोभनीय है? क्या हम बुराई का दमन उससे बड़ी बुराई द्वारा कर उसे कानून कह सकते हैं या भ्रष्टाचार का सामना उससे बड़े भ्रष्टाचार से कर उसे नैतिकता की संज्ञा दे सकते हैं या एक अपराध पर उससे अधिक भयंकर अपराध द्वारा विजय पाकर उसे न्याय का नाम दिला सकते हैं? क्या अमीर ने अपने जीवन में कभी शत्रु का संहार न किया होगा? या कभी किसी निर्बल की भूमि और संपत्ति का अपहरण न किया होगा या कभी किसी सुंदरी को धोखा न दिया होगा? क्या वह समस्त पापों से अछूता है जिसके आधार पर उसे हत्यारे का सिर काटने,चोर को फांसी पर लटकाने पर और दुष्चरित्रा पर पत्थरों से प्रहार करने का अधिकार प्राप्त है?

जिन्होंने चोर को वृक्ष से लटकाया है वे कौन हैं? क्या वे आकाश से उतरने वाले देवदूत हैं या साधारण मानव हैं जो अवसर मिलने पर अपहरण और बलात्कार करने से चूकते नहीं हैं? इस व्यक्ति का सिर किसने काटा है? क्या वे ऊपर से आने वाले पैगंबर हैं या साधारण सिपाही हैं जो इच्छानुसार हत्या और रक्तपात करते रहते हैं। इस दुष्चरित्रा पर पत्थरों से प्रहार किसके द्वारा हुआ है? क्या वे अपने आश्रम त्याग कर आने वाली पवित्र और महान आत्माएं हैं या इंसान के रूप में दरिंदे जो रात्रि के अंधकार में अपराध और पाप की कोटि में आने वाले कुकृत्य करते रहते हैं? और यह कानून कानून क्या है? इन्हें स्वर्ग से सूर्य रश्मियों के साथ उतरते किसने देखा है? किस युग में देवदूतों ने मनुष्य के साथ गमन करते हुए कहा है निर्बलों को जीवन के अधिकार से वंचित रखो और असहायों को तलवार के घाट उतार दो और पापियों को लौह पदों से कुचल दो। ये विचार जब मेरे मस्तिष्क और हृदय को मथ रहे थे, मैंने निकट ही पदचापों की आवाज सुनी। एक लड़की वृक्षों के मध्य से प्रकट होकर शवों की ओर बढ़ रही थी। वह चौकन्नी दृष्टि से चारों ओर देखती जाती थी जैसे डरी हुई हो। जैसे ही उसकी दृष्टि शीश विहीन युवक के धड़ पर पड़ी, उसके मुख से भय की एक चीख निकली और वह कांपते हाथों से युवक का आलिंगन करती हुई उसके चरणों पर झुक गई। आंखें आसुओं से डबडबा आईं और उंगलियां युवक के घुंघराले बालों से उलझ गईं। फिर वह धीमी आवाज में सुबकने लगी जो उसके अंतस्थल की गहराई से फूट रही थी। एकाएक वह अपने हाथों से तेजी से भूमि खोदने लगी और खोदती रही जब तक वहां एक चौड़ी गहरी कब्र न बन गई। तब उसने मृत युवक की बाहों के मध्य उसके रक्तरंजित सिर को रखकर उसे हौले से उठाकर कब्र में लिटा दिया। मिट्टी से उसे ढक देने के उपरांत उसने उस तलवार को, जिससे युवक का सिर काटा गया था, वहीं कब्र पर गाड़ दिया। जब वह जाने को हुई, मैं उसके सामने आ गया। वह सहम गई और भय से कांपने सी लगी। उसकी दृष्टि पृथ्वी पर झुक गई और गर्म-गर्म आंसू आंखों से निकलकर वर्षा के समान बरसने लगी। एक गहरी सांस सोचते हुए कुछ देर बाद वह बोली यदि आप चाहें तो अमीर को इस बात की सूचना दे सकते हैं। जिसने मेरे पवित्रता की रक्षा की है उस युवक के शव को गिद्ध और जंगली पशुओं से नोचवाने के लिए

30/36

छोड़ जाने की अपेक्षा मैं इसके मार्ग पर चलते हुए उसके समीप पहुंच जाना कहीं अच्छा समझूंगी।

डरिए मत, मैं बोला इस युवक के दुर्भाग्य पर मैं भी दुखी हूं। पर मुझे यह बताइए, इसने आपकी पवित्रता की रक्षा कैसे की? वह कहने लगी, अमीर का एक दरबारी मेरे खेत पर टैक्स लगाने और लगान वसूल करने आया था। मुझे वहां पाकर वह ललचाई दृष्टि से मुझे घूरने लगा जिससे मैं बेहद डर गई थी। उसने मेरे पिता पर टैक्स के रूप में एक भारी रकम बांध दी, जो इतनी भारी थी कि एक धनिक की सामर्थ्य से भी अधिक थी। रकम सब वसूल न हुई तो उसने मुझे पकड़ लिया और पैसे के बदले मुझे ही अमीर के महल की ओर बलपूर्वक ले जाने लगा। मैंने उसे रोककर दया की भीख मांगी पर उसने कोई ध्यान न दिया। मैंने उसे पितातुल्य कहा और गिड़गिड़ाई, पर वह न पसीजा। तब मैंने चिल्लाकर गांव वालों को सहायता के लिए पुकारा और उस समय इस युवक ने, जिससे मेरी मंगनी हो चुकी थी, आकर मेरी रक्षा की। इस पर उस दरबारी ने क्रुद्ध होकर वार करना चाहा, पर वह इसके लिए पहले से तैयार न था और अपने साथ घर से पुरानी तलवार लेकर आया था। उसने उसी से दरबारी को समाप्त कर दिया। यह युवक मेरी पवित्रता और अपने जीवन की रक्षा करने के अपराध में मारा गया है। अपने आत्मा की विशालता के कारण यह एक साधारण हत्यारे की भांति वहां से भागा नहीं, बल्कि दरबारी के शव के पास तब तक खड़ा रहा, जब तक सिपाहियों ने उसे पकड़ नहीं लिया और बेड़ियों से जकड़ कर जेल में घसीट नहीं ले गए।

यह कहकर लड़की ने मेरी ओर हृदय विदारक दृष्टि से देखा और मुड़कर अतंर्ध्यान हो गई। व्यथा से डूबा उसका स्वर वहां की वायु की सतह को तरंगित और विकंपित करने लगा।

कुछ क्षण के अंतराल के बाद वहां एक युवक आया। उसका मुह अंशतः उसके लंबे कोट से छिपा था। उसने उस दुश्चरित्रा के शव के निकट जाकर उसकी नग्नता को ढकने के लिए उस पर अपना कोट उतारकर डाल दिया। फिर वह एक छुरे से वहां की भूमि खोदने लगा। कब्र बन जाने पर उसने उसके शव को हल्के से उठाकर उसमें लिटा दिया और उसे मिट्टी से पाटने लगा। मिट्टी का प्रत्येक कण उसके आंसू से भीग रहा था। कार्य समाप्ति पर उसने वहां लगे कुछ पुष्प तोड़े और उन्हें कब्र पर बिखेर दिया।

जब वह जाने लगा मैंने उसे रोककर पूछा, इस मृत स्त्री से आपका क्या नाता है? जिसके लिए आपने अमीर की आज्ञा का विरोध करने का साहस किया और जानवरों से इसके शव की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों को संकट में डाला?

उसने मुझे उन आंखों से देखा, जो जगने और रोने से लाल हो गई थीं और उसकी असीम वेदना और व्यथा को प्रकट कर रही थीं। सुबकियों से टूटते स्वर में वह कहने लगा मैं ही वह अभागा पुरुष हूं जिसकी खातिर यह स्त्री पत्थरों से मारी गई है। हम दोनों बचपन से साथ-साथ खेलते थे और एक दूसरे से प्रेम करते थे। ज्यों-ज्यों हम बढ़ते गए, त्यों-त्यों हमारा यह प्रेम बढ़ता गया और एक दिन यह इतना बढ़ गया कि इसमें एक शक्तिशाली सम्राट का रूप ग्रहण कर लिया, जिसकी हम दोनों को अपने हृदय से सेवा करनी पड़ी। हमारी आत्माएं इस प्रेम के सम्मुख खड़ी होने से भय खाती हैं, पर वह हमको बराबर अपने पास खींचता रहा। एक दिन जब मैं कस्बे से बाहर था, मेरी प्रेयसी बल पूर्वक एक अन्य पुरुष को जिससे वह घृणा करती थी, सौंप दी गई। वापसी कर जब मैंने यह सुना, तो मेरे दिन और रातें और मेरी जिंदगी एक लंबी और कड़वी मौत बन गई। मैंने अपने प्रेम से संघर्ष किया और अपने हृदय की आकांक्षाओं से जूझा और तब तक जूझता रहा, जब तक उन्होंने मुझे पस्त कर अंधा न बना दिया। एक दिन मैं छिपकर अपनी प्रेयसी के आवाज को सुनने से अधिक कुछ न थी। मैंने उसे एकांत में अपने भाग्य पर आंसू बिसूरते और अपने पहाड़ जैसे दिनों को बेचैनी से काटते पाया। हम दोनों पास-पास बैठ गए। हमारी खामोशी ही हमारी बातचीत थी और हमारी पवित्रता ही हमारा साथी। अभी एक घंटा भी न बीता होगा कि उसका पति आ गया। जब उसने मुझे वहां देखा तो उसकी पशुता भड़क उठी। उसने मेरी प्रेयसी की कोमल गरदन अपने खुरदुरे हाथों से पकड़ ली और ऊंची आवाज से चिल्लाने लगा, तुम सब आकर देखो यह छिनाल अपने आशिक के साथ यहां बैठी है। इस पर उसके पड़ोसी दौड़ आए और उनके पीछे ही पूछताछ करते हुए सिपाही आ गए। उसके पति ने उसे उनके हाथों सौंप दिया और वे उसे खुले बालों व फटे वस्त्रों से ले गए। मुझसे किसी ने भी कुछ न कहा, क्योंकि हमारा अंधा कानून और भ्रष्ट परंपराएं दुष्चरित्रता के अपराध में केवल स्त्रियों को ही दंडित करती हैं और पुरुषों को ओट दे जाती हैं।

ये कहकर वह युवक नगर को वापस मुड़ गया। उसकी आकृति एक बार फिर उसके लंबे कोट में छिप गई। मैं वहां सोचता विचारता वेदना में डूबा खड़ा रहा। चोर का लटकता हुआ शव वृक्ष की शाखाओं के बीच से आते हुए वायु के थपेड़े से हिल रहा था। इस तरह मानो वह वायु की शक्ति को फुसला रहा था कि वह रस्सी को तोड़कर उसे पृथ्वी पर सुला दे, जहां वीरता और प्रेम के दो शहीद सोए हुए थे।

एक घंटा बीता होगा कि वहां चीथड़ों में लिपटी बीमार सी एक स्त्री आई। वह रोती और छाती पीटती हुई उस हिलते हुए शव के नीचे खड़ी हो गई। फिर वह वृक्ष पर चढ़ गई और अपने दांतों से उस समय तक रस्सी कुतरती रही, जब तक शव भीगे हुए कपड़ों के गट्ठर ने गिरने जैसी आवाज करता हुआ पृथ्वी पर न गिर पड़ा। तब नीचे उतर कर उसने उन दो कब्रों के निकट एक अन्य कब्र खोदी और शव को उसमें दफना दिया। मिट्टी से उसे पाट देने के बाद उसने वहां से लकड़ी के दो टुकड़े उठाए और उन्हें क्रास का आकार दे कर कब्र पर गाड़ दिया। तब वह जिस ओर से आई थी, उधर जाने लगी। मैंने उसे रोककर पूछा, एक चोर को दफनाने के लिए आप यहां क्यों आईं?

उसने मुझे दुख और कष्ट से धुंधले हुए नेत्रों से घूरा और बोली, यह मेरा नेक पति, दुख का साथी और मेरे बच्चों का पिता था। मेरे भूख से चिल्लाने वाले पांच बच्चे हैं। सबसे बड़ा आठ साल का है। और सबसे छोटा अभी मेरी छाती का दूध पीता है। मेरा पति चोर नहीं था। वह किसान था और मठ की जमीन जोतता था। पर मठाधीशों से उसे इसके बदले एक रोटी को छोड़कर और कुछ नहीं मिलता था। रोटी के हम अपने-अपने भाग के टुकड़े करते और रात को खा लेते थे। सुबह के लिए कुछ न बचता था। जवानी के दिनों में उसने अपनी

देह के पसीने से खेत सींचे थे और अपनी बांहों की शक्ति से वहां की धरती गुलजार की थी। जब वर्षों के इस कठोर परिश्रम से वह पस्त हो गया और उसकी शक्ति चुक गई, वह बीमार हो गया, तब महंतों ने उसे यह कहकर निकाल दिया कि अब उन्हें उसकी जरूरत नहीं है। मैं और मेरा पति बहुत रोए और उनसे मसीह के नाम पर दया की भीख मांगी और नबी पैगंबरों के नाम पर गिड़गिड़कर मिन्नें कीं पर उन्होंने न तो हमारे भूखे और नंगे बच्चों के लिए कोई प्रबंध किया न हमारी दशा पर पसीजे ही, तब मेरा पति काम की तलाश में शहर गया, पर केवल खाली हाथ वापस आने के लिए क्योंकि ऊंची-ऊंची कोठियों में रहने वाले जवान और मजबूत आदमियों को छोड़कर किसी को नौकरी नहीं रखते हैं। अंत में वह एक रास्ते पर बैठ कर भीख मांगने लगा, पर किसी से उसे भीख न मिली, राहगीर उसके आगे से निकलते हुए उसे दुत्कार देते कि दान सुस्ती और काहिली फैलाने वालों के लिए नहीं है। एक रात को भूख ने हमें इतना तंग किया कि हमारे बच्चे बेसुध होकर पड़ रहे और हमारा गोद का बच्चा मेरी सूखी छाती चिचोड़ने लगा, पर वहां दूध कहां? मेरे पति में एक परिवर्तन हुआ। वह रात के अंधेरे में छिपकर घर से बाहर निकल गया और मठ की एक खत्ती में घुस गया, जहां महंत खेतों की उपज जमा करते हैं। जब वह वहां से एक टोकरी में आटा भरकर निकल रहा था, महंत जाग गए और उन्होंने उसे पकड़कर खूब पीटा और गालियां दीं और सुबह उसे सिपाहियों को यह कहकर दे दिया कि वह मठ का स्वर्ण पात्र चुराने आया था। तब वह जेल ले जाया गया और वहां से चील-गिद्धों का पेट भरते के लिए इस स्थान पर डाल दिया गया। मेरे पति का अपराध केवल इतना था कि उसने उन दानों से, जिन्हें उसने मठ की सेवा करते हुए अपने पसीने से उपजाया था, अपने बच्चों का पेट भरना चाहता था।

वह अभागी स्त्री भी यह कह कर वहां से चली गई। उसके टूटे हुए स्वर से निकली हुई दुख की काली छायाएं वायु में भटकने वाले धुंए के समान भटकने लगीं।

मैं उन तीनों कब्रों के मध्य उस व्यक्ति की भांति खड़ा था, जिसकी आंखें और जबान शोक से चौंधिया और बंद हो गई हों और केवल आंसू ही उसकी आंतरिक पीड़ा को कहते हों। मैंने सोचना-विचारना चाहा पर मेरी आत्मा ने विद्रोह किया क्योंकि आत्मा एक पुष्प है, जो अपनी पंखुड़ियों को अंधकार से बचाने के लिए पकड़े रहती है, और रात की छायाओं को सुगंध नहीं देती है।

मैं वहां उस समय तक खड़ा था, जब तक कि अत्याचार के विरोध में कब्रों को ढंकने वाली मिट्टी का प्रत्येक कण खाली घाटी से उठने वाले कोहरे के समान उठकर अंतर को स्वर देने के लिए लहरों की भांति मेरे कान से टकराने न लगा।

मैं खड़ा था और आहें भर रहा था। काश, मेरी आहों की लपटें उस मैदान के वृक्षों को स्पर्श कर उत्तेजित कर सकतीं और वे अपना स्थान छोड़कर टुकड़ियों में कूच करते हुए अपनी शाखाओं द्वारा अमीर और उसके सैनिकों के विरुद्ध युद्ध छेड़ देते और अपने तनों से मठों की दीवारें ढहा कर उसके अंदर रहने वालों को कुचल देते।

मैं खड़ा था और देख रहा था और मेरी आंखों से करुणा की मधुरता और व्यथा की कड़वाहट फूटकर उन नई कब्रों पर बह रही थी। एक युवक की कब्र, एक लड़की की पवित्रता की रक्षा उसने अपने प्राणों से की और उसे एक भेड़िए के जबड़े से निकाल लाया और इस साहसिकता के ळिए जिसे सिर कटाने का पुरस्कार मिला। उस लड़की ने आकर उसी तलवार को, जिससे युवक का सिर काटा गया था, अज्ञानता और अनाचार के साम्राज्य में अमीर द्वारा किए गए अत्याचार के चिन्ह और प्रतीक के रूप में सूर्य के सम्मुख वहीं भूमि में गाड़ा था। दूसरी कब्र उस लड़की की है जिसके शरीर का स्पर्श प्रेम ने नष्ट होने से पहले कर लिया था। उन्होंने उसे इसलिए पत्थरों से मारा क्योंकि उसका हृदय मृत्युपर्यंत अपने प्रेमी के प्रति निष्ठावान रहा था। उसके प्रेमी ने उसके मौन शरीर पर पुष्प की एक माला चढ़ाई, जो मुरझा और सूखकर उन आत्माओं के दुर्भाग्य के बारे में बताएगी, जो प्रेम से पवित्र थीं, पर जो ऐसे प्राणियों के मध्य निवास करती थईं, जो मद से अंधे और शक्ति से पागल थे। तीसरी कब्र उस अभागे की है जिसकी भुजाओं और शक्ति मठ के खेतों के परिश्रम से शिथिल हो गई थी। और उसके स्थान पर दूसरे रख लिए गए थे। उसने नौकरी द्वारा अपने बच्चों के लिए रोटियां प्राप्त करनी चाही थी पर नहीं मिलीं। उसने भीख मांगी चाही, पर नहीं मिली। जब निराशा ने अपने स्वेद और परिश्रम का प्रतिदान मांगने के लिए विवश कर दिया, उन्होंने उसे बंदी बनाकर मिटा दिया। उसकी विधवा ने उसकी कब्र पर एक क्रास गाड़कर रात के नीरव आकाश में झिलमिलाने वाले सितारों को उस अत्याचार के विरुद्ध गवाह बनाया था जो मसीह के उपदेशों को निर्बल और असहायों को संहार करने वाली तेज तलवार में बदल देते हैं।

शीघ्र ही सूरज झुककर आकाश के धुंधलके में डूब गया, जैसे अमीर के इन कृत्यों को देखकर उसने घृणा से मुंह छिपा लिया। संध्या भी प्रकृति का शरीर छिपाने के लिए अंधकार और नीरवता के धागों से एक आवरण बुनने लगी।

मैंने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और कब्रों की ओर उनके चिन्ह और प्रतीकों के अनुरूप हाथ फैलाते हुए कहा, हे वीरता तेरी यह तलवार है, जो पृथ्वी में गाड़ दी गई है। हे प्रेम तेरे ये पुष्प हैं, जो गर्मी से झुलस रहे हैं? हे मसीह, तेरा यह क्रास है जिसे रात का अंधकार लीले जा रहा है।

सहयोग

(पंजीकृत स्वयं सेवी संगठन)
पंजीयन क्रमांक- *1800/90-91*
पंजीकृत कार्यालय : 109, सेक्टर-6, वैशाली, **जनपद :** गाजियाबाद

पिछले एक दशक से अधिक समय से स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल, ग्रामीण विकास, सांस्कृतिक व पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सतत् कार्यरत।

छह बरस के बाद

■ कैथरीन मेंसफील्ड

और फिर, छह बरसों के बाद उसने उसे दोबारा देखा। वह बांस से बनी उन छोटी-छोटी मेजों में से एक पर बैठा था। मेज कागज से बने डेफोडिल फूलों के जापानी गुलदस्ते से सजी हुई थी। सामने फलों की एक बड़ी प्लेट रखी हुई थी और वह अपने उसी खास अंदाज से संतरा छील रहा था। जिसे वह खूब पहचानती थी इसी वजह से इसने उसे फौरन पहचान लिया।

उसने भी अपने भीतर अचानक पहचान लिए जाने को एक झटके के साथ महसूस किया। क्योंकि जैसे ही उसने सिर उठाया था उन दोनों की आंखें मिली थीं। नामुमकिन वह एक दम से पहचान ही नहीं पाया। वह मुस्करायी, इसने त्योरियां चढ़ा लीं। वह उसके करीब आयी। उसने पल भर के लिए आंखें बंद कीं, पर आंखें खोलते ही उसका चेहरा चमक उठा, जैसे अंधेरे कमरे में माचिस की तीली जलाने से होता है। उसने संतरा रख दिया और कुर्सी पीछे की तरफ खिसका दी। इसने गर्माहट भरा अपना हाथ दस्ताने में से बाहर निकाला और उसके हाथ में दे दिया।

वैरा, यह विस्मय से चिल्लाया कितनी अजीब बात है वाकई एक क्षण के लिए तो मैं तुम्हें पहचान ही नहीं पाया। क्या तुम बैठोगी नहीं? तुमने खाना खाया? काफी लोगी?

वह हिचकिचाई पर फिर बोली ठीक है काफी ले लूंगी और वह उसके सामने आकर बैठ गई।

तुम बदल गई हो, तुम बहुत ज्यादा बदल गई हो। वह उसकी ओर लगातार विस्मय और अधीरता से देखता रहा। यार तुम सचमुच बहुत अच्छी लग रही हो। मैंने पहले तुम्हें कभी इतना खूबसूरत नहीं पाया।

सच, इसने अपने चेहरे से रूमाल हटाया और गले तक बंद फर कोट के कालर का बटन खोल दिया। मेरी तबीयत कुछ ढ़ीली लग रही है।

तुम तो जानते हो मुझसे यह मौसम सहा नहीं जाता।

अरे हां तुम्हें तो जाड़े से नफरत है।

हां मुझे ये सख्त नापसंद है। वह ठंड से कांप रही थी। और सबसे बेकार बात यह है कि जैसे-जैसे हम बूढ़े होते जाते हैं....

उसने बीच में ही उसे टोका, क्षमा चाहता हूं और बैरे को बुलाने के लिए मेज थपथपाने लगा। थोड़ी काफी और क्रीम ले आओ। और फिर दोबारा उसकी ओर मुखातिब हो गया, क्या वाकई तुम कुछ नहीं खाओगी? थोड़ा सा फल तो ले ही सकती हो। यहां फल बहुत अच्छे हैं।

नहीं शुक्रिया

ठीक है, हंसते हुए उसने दोबारा संतरा उठा लिया। हां तो तुम कह रही थी जो जितना बूढ़ा होता जाता है-

उतना ठंडा होता जाता है। वह हंस पड़ी। हालांकि वह सोच रही थी उसकी यह आदत, बीच में इस तरह टोकने की- आज भी उसे कितनी अच्छी तरह याद है। और कैसे छह बरस पहले उसकी इस आदत से वह कितनी भड़क उठती थी। उसे हमेशा लगता मानो बात करते-करते उसने अचानक इसके होठों पर हाथ दिया हो और उसे भूल कर कुछ और करने लग गया हो। और फिर हाथ हटाकर अपनी उसी चौड़ी मुस्कान से उसकी ओर मुखातिब हो... हां तो अब हम तैयार हैं। अब सब कुछ निपट गया है।

उतना ठंडा होता जाता है, उसने हंसते हुए उसी के शब्दों को ज्यों का त्यों दोहराया। ऐ,तुम अब भी वैसी ही बातें करती हो और तुम्हारी एक और बात है जो बिल्कुल भी नहीं बदली, तुम्हारी खूबसूरत आवाज-बात करने का तुम्हारा मोहक अंदाज। अब वह काफी गंभीर था। वह इसकी तरफ कुछ झुका, इसने संतरे के छिलकों की ताजी, तेज खुशबू महसूस की। तुम्हें सिर्फ एक शब्द कहना होगा और कई आवाजों के बीच भी मैं तुम्हारी आवाज को बखूबी पहचान लूंगा। मुझे अकसर ताज्जुब होता है कि ऐसा क्या है जो तुम्हारी आवाज मेरे दिमाग में एक न भूलने वाली याद बन कर रह गयी है...

क्या तुम्हें वह पहली दोपहर याद है जो हमने साथ-साथ क्यू गार्डन में बितायी थी? तुम्हें कितना अजीब लगा था कि मुझे किसी भी फूल का नाम नहीं पता था। तुम्हारे सारे नाम बताने के बावजूद मैं आज भी फूलों के नामों से उतना ही अनजान हूं- यह वाकई अजीब विस्मय की बात है कि जब भी सब कुछ खुशनुमा और सुखद होता है और मैं कोई चमकदार, चटक रंग देखता हूं तो मुझे तुम्हारी आवाज सुनाई देती है: ग्रेनियम, मेरीगोल्ड और वैरबोना। और मुझे लगता है कि उस विस्मृत भूली बिसरी भाषा के ये तीन शब्द ही मुझे याद रह गए हैं... तुम्हें यह दोपहर याद है?

अरे हां, बिल्कुल बहुत अच्छी तरह याद है, उसने एक गहरी लंबी सांस ली। मानो दोनों के बीच रखे उन खूबसूरत कागजी डेफेडिल के फूलों को भी सहना बहुत मुश्किल लग रहा हो। पर फिर भी उस दोपहर की जो याद उसके जेहन में थी उससे उसे चाय के टेबल पर एक बेतुका सा दृश्य याद आया- चाइनीज पेगोड़ा में काफी बड़ी संख्या में लोग चाय पी रहे थे और इसमें बिल्कुल उसी सनकी आदमी की तरह तुनकमिजाजी दिखायी थी, वह अपनी पुआल की टोपी से सबके साथ ठिठोली करता रहा जबकि उसका यह बर्ताव किसी भी तरह उस मौके के अनुकूल नहीं था। चाय पीते हुए केवल कुछ सिर-फिरे लोग ही उसके इस व्यवहार का आनंद ले रहे थे। और कैसे उसे यह सब झेलना पड़ा था।

पर अब, जब वह बोल रहा था, तो वह याद धुंधली पड़ गई थी। वह ठीक ही कह रहा था। हां, वह वाकई एक अच्छी दोपहर थी। ग्रेनियम, मेरीगोल्ड और वेरेबोना तथा खुशनुमा धूप से भरी। उसका ध्यान अंतिम दो शब्दों पर अटक गया। मानो उसने इन शब्दों को अभी-अभी गाया हो।

उस खुशनुमा धूप के साथ एक और याद जुड़ी हुई थी। उसने खुद को एक लान में बैठा पाया था और वह उसके पास लेटा हुआ था, और अचानक काफी देर की चुप्पी के बाद वह घुमा और अपना सिर उसकी गोद में रख दिया था।

काश, उसने फुसफुसाते हुए कहा था काश मैने जहर खा लिया होता और इसी क्षण मैं मर रहा होता।

उसी क्षण एक नन्हीं सी लड़की सफेद फ्राक पहने हाथ में बड़ा लिली का फूल लिए झाड़ी के

पीछे से दौड़ती हुई आयी उसने इनकी ओर आंखें फाड़कर देखा था। और फिर भागकर चली गई थी। पर वो यह सब नहीं देख पाया था। वह उसके ऊपर झुकी हुई थी।

ऐ,तुम ऐसा क्यों कहते हो ? मैं तो कभी ऐसा नहीं कह सकती।

पर उसने एक हल्की सी आह भरी और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर खुद के गाल पर रख दिया।

क्योंकि मैं जानता हूं मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूं- बेइंतहां प्यार और मुझे बहुत दुख झेलना पड़ेगा, क्योंकि वेरा तुम मुझे कभी प्यार नहीं करोगी।

पहले की तुलना में अब वह काफी बेहतर दिखायी दे रहा था। उसका उस सपनीली दुनिया में रहना और हमेशा अनिश्चित रहना अब एक दम खत्म हो गया था। अब उसमें एक पुरुषोचित्त गंभीरता थी। जिसने जीवन में एक मुकाम हासिल कर लिया हो, जो आदमी को आत्म विश्वास और सुरक्षा से भर देता है। कुल मिलाकर अब वह काफी प्रभावशील लग रहा था। उसने पैसे भी खूब कमाए होंगे, उसके कपड़े बढ़िया थे और उस पर फब रहे थे। उसी क्षण उसने अपनी जेब से रशियन सिगरेट की डिब्बी निकाली।

तुम लोगी ? हां मैं लूंगी। उसने उन्हें उठा लिया। ये बढ़िया सिगरेट लग रहे हैं। हां मेरे खयाल से ये बढ़िया सिगरेट हैं। मैं इन्हें खास अपने लिए सेंट जेम्स स्ट्रीट में एक मामूली से आदमी से बनवाता हूं। मैं ज्यादा धूम्रपान नहीं करता। मैं तुम्हारी तरह नहीं हूं। पर मैं जब भी पीता हूं, मुझे जायकेदार और बिलकुल ताजा सिगरेट चाहिए। धुआं उड़ाना मेरी आदत नहीं बल्कि सुख का साधन है। बिलकुल किसी इत्र की तरह। क्या तुम्हें अब भी इत्र बहुत पसंद है ? जब मैं रूस में था....वह बीच में ही बोली, क्या तुम वाकई रूस गए हो ? अरे हां मैं करीब साल भर से ज्यादा वहां रहा था। तुम शायद भूल गई हो, हम हमेशा वहां जाने की बातें किया करते थे। नहीं मैं नहीं भूली हूं।

उसके चेहरे पर एक अजीब अधूरी सी मुसकान आई और वह कुर्सी के पीछे टिक कर बैठ गई। क्या यह अजीब बात नहीं, मैं वाकई उन सभी जगहों पर गया हूं जहां जाने की हमने योजना बनाई थी। हां मैं उन तमाम जगहों पर गया और काफी समय तक रहा। जैसा कि तुम कहा करती थी। वहां की हवा को महसूस करना चाहिए। दरअसल मैंने पिछले तीन साल लगातार यात्राएं ही की हैं। स्पेन, कोर्शिका, साइबेरिया, रूस, मिस्र। अब केवल चीन ही रह गया है और मेरा वहां जाने का भी पूरा इरादा है, जब युद्ध समाप्त हो जाएगा।

जैसे वह बता रहा था, धीरे-धीरे....सिगरेट की राख ऐश ट्रे में झाड़ते हुए। इसे लगा मानों सालों से उसके अंदर सोया एक अजीब सा पशु अचानक जाग उठा हो और उसके भीतर पूरी तरह पसर गया हो और जमहाई ले रहा हो। उसने अपने कान खड़े कर लिए हैं। कूद कर वह पैरों पर खड़ा हो गया है और अपनी ललचाई प्यासी नजरों से उन दूर दराज के इलाकों को घूर रहा हो पर हंसते हुए धीरे से उसने केवल इतना ही कहा, मुझे तुमसे ईर्ष्या हो रही है।

उसने सिर हिलाया, यह सब बड़ा अद्भुत रहा है खासकर रूस। रूस में वह सब कुछ है जिसके हमने कल्पना की थी और शायद उससे भी बहुत अधिक। मैंने कुछ दिन वोल्गा नदी पर नाव पर भी बिताए। क्या तुम्हें मल्लाह का वह गीत याद है जो तुम अक्सर बजाया करती थी। हां जैसे ही उसने यह कहा, वह गीत उसके भीतर बजने लगा। क्या तुम अब भी वह गीत बजाती हो ? नहीं मेरे पास पियानो नहीं है। वह चकित हो गया पर तुम्हारे उस खूबसूरत पियानो का क्या हुआ ? उसने थोड़ा सा मुंह बनाया, सालों पहले बेच दिया। पर तुम्हें तो संगीत का कितना शौक था। उसे अचरज हुआ। अब उसके लिए मेरे पास समय नहीं है। वह बोली।

वह कुछ नहीं बोल पाई। नदी पर बिताया जीवन वह आगे बताने लगा कितना कुछ खास तरह का था। एकाध दिन के बाद आपको यह लगता ही नहीं कि आप किसी और जीवन को भी जानते हैं। यह भी जरूरी नहीं कि आपको उनकी भाषा की जानकारी हो। नाव पर रहते हुए आपके और उन लोगों के बीच एक बंधन सा बंध जाता है और इतना ही काफी होता है। आप उनके साथ खाते हो, उठते हो, बैठते हो, पूरा दिन बिताते हो और शाम को शुरू हो जाता है संगीत का एक अंतहीन सिलसिला।

वह कांपने लगी। उसके भीतर फिर से मल्लाह का गीत वह पीड़ा भरा गीत जोर-जोर से बजने लगा। उसने देखा कि एक गहरे रंग की नाव पानी पर चल रही है। नदी के दोनों ओर उदास पेड़ खड़े हैं। वह कांपने लगी। हां मुझे यह सब बहुत पसंद है। वह अपना दस्ताना सहलाते हुए बोली।

रूसी जीवन की लगभग हर चीज तुम्हें पसंद आएगी, उसने बड़ी आत्मीयता से कहा। वहां सब कुछ इतना अनौपचारिक, इतना आवेश से भरा हुआ, इतना मुक्त है कि कहीं किसी संदेह का सवाल ही नहीं। और फिर वहां के किसान कितने अद्भुत। वे इतने बढ़िया इंसान हैं-हां वहां सब कुछ ऐसा ही है। यहां तक कि जो आदमी घोड़ा गाड़ी चलाता है वह भी आसपास जो कुछ भी घट रहा है, उसका एक हिस्सा लगता है। मुझे याद है एक शाम। हम सब यानी मेरे दो दोस्त और उनमें से एक की बीबी ब्लैक सी के किनारे पिकनिक मनाने गए थे। हमने अपना खाना और शैंपेन ली और घास पर ही बैठकर खाने-पीने लगे। जब हम खा रहे थे तो गाड़ीवान आया। थोड़ी सी डिल पिकल लीजिए, वह बोला। वह सब कुछ हमारे साथ बांटना चाहता था। मुझे यह सब इतना अच्छा लगा था। तुम समझ सकती हो न मैं क्या कहना चाहता हूं।

और उस छड़ उसे लगा मानो वह उस रहस्यमय ब्लैक सी के किनारे घास पर बैठी हो। समुद्र बिलकुल मखमल की तरह काला था और उसकी शान मखमली लहरें किनारे पर आकर तरंग पैदा कर रही थीं। उसने सड़के के किनारे खड़ी बैलगाड़ी को भी देखा और घास पर बैठे उस दल को भी जिनके चेहरे और हाथ चांदनी में चमक रहे थे। उस औरत को पीले वस्त्र को भी देखा जो फैला हुआ था। उसने उसके तह किए हुए छाते को भी देखा जो घास पर इस तरह पड़ा था जैसे कसीदाकारी करने का मोतियों वाला कोई बड़ा हुक पड़ा हुआ हो। इनसे थोड़ा सा हटकर घुटने पर अपना खाना लिए बैठा गाड़ीवान भी उसे दिखाई दिया जो कह रहा था डिल पिकल लीजिए और यद्यपि उसे पता नहीं था कि यह डिल का अचार होता क्या है। फिर भी उसने अंदाज लगाया कि हरे कांच की बर्नी के भीतर से तोते की चोंच जैसी लाल मिर्च की तरह की कोई चीज चमक रही है। उसने उसे अपने मुह के भीतर रखकर चूसा। डिल अचार बेहद खट्टा था.....हां मैं बहुत अच्छी तरह समझ गई तुम क्या कहना चाहते हो, वह बोली।

उसके बाद एक क्षण चुप्पी छाई रही। इसी क्षण दोनों ने एक दूसरे को देखा, अतीत में जब कभी वे इस तरह एक दूसरे को देखते थे उन्हें आपस में एक ऐसी समझ का अहसास होता था

जो उनकी आत्माओं में बसी हुई है। कुछ ऐसे मानो कि एक दूसरे की बाहों में खोए हुए शोकमग्न प्रेमियों की तरह समुद्र में कूद पड़ने को तैयार। पर अब अचरज की बात यह थी कि उसी ने अपने कदम पीछे हटा लिए और वह बोला तुम कितनी तल्लीनता से सब कुछ सुनती हो। जब तुम अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से मुझे देखती हो तो मुझे लगता है कि मैं तुम्हें वह सब कुछ बता सकता हूं जो शायद मैं किसी दूसरे इंसान को कभी नहीं बता पाऊं। क्या उसके स्वर में खिल्ली उड़ाने जैसा कुछ भाव था या यह उसके अपने मन का वहम था? वह कुछ समझ नहीं पाई। मैं जब तुमसे मिला नहीं था वह बोला मैंने कभी किसी से अपने बारे में कोई बात नहीं की। मुझे वह रात भी अच्छी तरह याद है जब मैं तुम्हारे लिए एक छोटा सा क्रिसमस पेड़ लाया था और तुम्हें अपने बचपन के बारे में सब कुछ बताया था। मैंने बताया था कि कैसे एक दिन इतना दुखी था मैं घर से भागा था और दो दिनों तक अपने अहाते में रखी ठेला गाड़ी के नीचे रहा था। कोई मुझे खोज नहीं पाया था और तुम सुनती रही थी। तुम्हारी आंखें चमक रही थीं और मुझे लगा जैसे तुम्हारे असर में आकर वह छोटा सा क्रिसमस पेड़ भी मेरी दास्तान सुन रहा था। वैसे ही जैसे परी कथाओं में होता है।

पर उस शाम की बात से उसे उस जायकेदार मुरब्बे के छोटे डिब्बे की याद आई जिसकी कीमत छह या सात केंस थी जो उसे बहुत अधिक लग रही थी और वह उसे सहन नहीं कर पा रहा था। जरा देखो तो इतने छोटे से डिब्बे की इतनी ज्यादा कीमत। जब वह मुरब्बा खाती रही वह उसे खुशी और अचरज से निहारता रहा। नहीं यह तो एक तरह से पैसे खाना है। तुम इस आकार के छोटे से डिब्बे में सात शिलिंग डाल भी नहीं सकते। जरा सोचो यह कितना मुनाफा कमाते होंगे? और वह किसी जटिल हिसाब-किताब में उलझ गया था पर अब मछली के जायकेदार मुरब्बे को अलविदा। क्रिसमस पेड़ मेज पर था और वह नन्हा सा बच्चा ठेला गाड़ी के नीचे अहाते के कुत्ते पर अपना सिर टिका कर सो रहा था। उस कुत्ते का नाम बोसून था न। वह खुशी से चिल्ला पड़ी। पर वह कुछ समझ नहीं पाया कौन सा कुत्ता? क्या तुम्हारे पास कोई कुत्ता था? मुझे तो कुत्ते के बारे में बिलकुल याद नहीं। नहीं, नहीं मैं तो उस अहाते के कुत्ते के बारे में बात कर रही हूं। जब तुम बहुत छोटे थे, वह हंसा और उसने सिगरेट की डिब्बी झपट कर छीन ली।

क्या कोई कुत्ता सचमुच था, मैं तो भूल ही गया हूं। जैसे यह सब सदियों पहले की बात हो। मुझे विश्वास नहीं होता कि केवल छह साल ही बीते हैं। आज जब मैंने तुम्हें पहचाना तो मुझे अतीत में एक बहुत लंबी छलांग लगानी पड़ी। उस समय तो दोबारा जेहन में लाने के लिए मुझे अपनी पूरी जिंदगी के बारे में नए सिरे से सोचना पड़ा।

उस समय बिलकुल बच्चा था, वह मेज को बजाने लगा। मैं अकसर सोचता हूं कि मैं तुम्हें कितना बोर किया करता था और अब मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं कि तुमने जो भी लिखा था क्यों लिखा था। हालांकि उस वक्त तो तुम्हारे उस खत ने बिलकुल मेरी जान ही ले ली थी। कुछ अरसा पहले दोबारा वह खत मेरे हाथ लगा था और उसे पढ़कर मैं अपनी हंसी रोक नहीं पाया था। कितना बुद्धिमानी से भरा था तुम्हारा खत- मेरी बिलकुल सही तस्वीर खींची थी तुमने, उसने नजर ऊपर उठाई। तुम नहीं जाओगी? वह उठने लगी थी।

उसने दोबारा अपना कालर बंद कर लिया था और चेहरे पर झीना आवरण डाल लिया था। नहीं मुझे जाना ही होगा वह बोली और किसी तरह मुसकराई। अब वह जान गई थी कि वह उसका मजाक उड़ा रहा था।

अरे नहीं बाबा प्लीज वह गिड़गिड़ाया। कुछ देर तो रुक जाओ। और उसने मेज पर से उसका एक दस्ताना उठा लिया और उसे ऐसे पकड़ लिया मानो उसी से वह उसे रोक लेगा। आजकल बात करने के लिए मुझे इतने कम लोग मिलते हैं कि मैं बर्बर होता जा रहा हूं। क्या मैंने तुम्हें ऐसा कुछ कह दिया है जिससे तुम्हें दुख पहुंचा है?

बिलकुल नहीं वह झूठ बोल गई पर जब उसने देखा कि वह उसके दस्ताने को कोमलता से धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से सहला रहा है तो उसका गुस्सा काफूर हो गया और उस क्षण वह उसे छह वर्ष पहले जैसा ही लगा.....।

उस समय मैं वाकई चाहता था, उसने धीमे स्वर में बोलना शुरू किया कि एक तरह से तुम्हारे लिए एक कालीन की तरह बन जाऊं उस पर तुम चलो ताकि तुम्हें पत्थर और गिट्टी पर बिलकुल न चलना पड़े और तुम्हें कोई चोट न लगे। मेरे दिल में इससे अधिक कुछ भी नहीं था। मेरा कोई स्वार्थ न था। हां बाद में मेरी यह इच्छा जरूर थी कि मैं केवल कालीन नहीं बल्कि एक जादुई कालीन बन जाऊं और तुम्हें उठाकर उन तमाम देशों में ले जाऊं जहां जाने की तुममें इतनी ललक थी।

जब वह बोल रहा था उसने अपना सिर ऐसे उठाया जैसे वह कुछ पी रहा हो और उसके भीतर का वह विचित्र पशु एक बार फिर करवट लेने लगा। मुझे लगता था तुम इस दुनिया में सबसे ज्यादा तनहा हो, वह बोलता गया और फिर भी शायद तुम्हीं एक मात्र हो जो दुनिया में वाकई सही मायने में जिंदा हो। अपने समय से अलग दस्ताने को सहलाते हुए वह बुदबुदाया भाग्यशाली।

हे ईश्वर उसने यह क्या कर डाला। कैसे उसने अपने नसीब अपनी खुशी को इस तरह से नकार दिया। यही तो एक शख्स था जो उसे समझता था। क्या अब वाकई देर हो चुकी है? क्या देर जैसा कभी कुछ होता है? वह उस दस्ताने की तरह थी जिसे उसने अपनी उंगलियों में थाम रखा था और फिर यह भी एक सच था कि तुम्हारे कोई दोस्त नहीं थे और न ही तुम लोगों से दोस्ती करती थी। मैंने यह कैसे जाना था क्योंकि मेरे भी कोई दोस्त नहीं था। क्या अब भी सब कुछ वैसा ही है? हां उसने सांस खींची। बिलकुल वैसा ही। मैं अब भी हमेशा की तरह अकेली हूं। मैं भी, वह धीरे से हंसा बिलकुल वैसा ही।

अचानक तेजी से उसने उसका दस्ताना उसे वापस किया और अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई पर मुझे उस समय जो इतना रहस्यमय लग रहा था, अब मेरे लिए एकदम स्पष्ट है और तुम्हें भी शायद....।

एक सीधी सी बात यह है कि हम दोनों इतने अहंकारी खुद में डूबे हुए थे कि हमारे दिलों में किसी और के लिए कोई जगह ही न थी। क्या तुम जानती हो, वह चिल्लाया। अब वह फिर अपने उसी दूसरे एकदम अंजान रूप में आ गया था। मैं जब रूस में था, मैंने मानव मस्तिष्क की प्रणाली को समझना शुरू किया था और उससे मैंने जाना कि हम बिलकुल अलग तरह के नहीं हैं। यह एक बहुत जानी पहचानी बात है.....। वह चली गई थी। वह वहीं बैठा रहा। हक्का बक्का एकदम अचंभित और फिर महिला वेटर से उसने बिल मंगवाया पर क्रीम को तो छुआ भी नहीं गया है वह बोला। प्लीज उसके पैसे मत लगाओ।

TACT

The heart of your kitchen

visit us at:

www.tactappliances.com

Decorative Chimneys

Built in Hobs

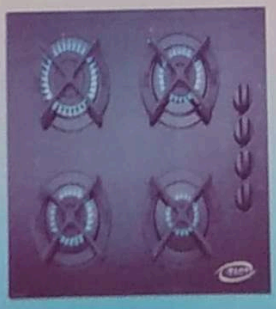

Traditional Chimneys

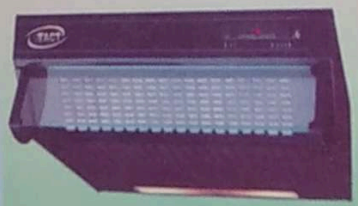

Cook tops

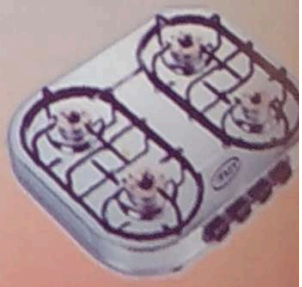

TACT APPLIANCES PVT. LTD